Digitized by Agamnigam Foundation, Chandigarh

2504

अथर्ववेद शतकम्

गोविन्दराम हासानन्द - दिल्ली

Adv. Vidit Chauhan Collection, Noida

Digitized by Agamnigam Foundation, Chandigarh

Adv. Vidit Chauhan Collection, Noida

Digitized by Agamnigam Foundation, Chandigarh

ओ३म्

श्री गोविन्दराम हासानन्द स्मृतिमाला पु०-५

अथर्ववेदशतकम्

[अथर्ववेद के सौ मन्त्रों का अनूठा एवं अपूर्व संकलन]

संकलनकर्त्ता तथा सम्पादक
परमहंस स्वामी जगदीश्वरानन्द सरस्वती

गोविन्दराम हासानन्द
४४०८, नई सड़क, दिल्ली-११०००६

Adv. Vidit Chauhan Collection, Noida

Digitized by Agamnigam Foundation, Chandigarh

वेद सब सत्य विद्याओं का पुस्तक है।
वेद का पढ़ना-पढ़ाना
और सुनना-सुनाना
सब आर्यों का
परम धर्म है।

—महर्षि दयानन्द

सर्वाधिकार प्रकाशकाधीन

षष्ठ संस्करण : १९८२

प्रकाशक | गोविन्दराम हासानन्द
आर्य साहित्य भवन,
४४०८, नई सड़क, दिल्ली-११०००६

मुद्रक | अतुल ऑफसेट वर्क्स
नरायणा नई दिल्ली-110028

Adv. Vidit Chauhan Collection, Noida

मूल्य | 4/- रुपये

Digitized by Agamnigam Foundation, Chandigarh

भूमिका

वेद ज्ञान-विज्ञान के अद्भुत भण्डार हैं। वे सब सद्विद्याओं के पुस्तक हैं। संसार में जितना ज्ञान, विद्याएँ और कलाएँ हैं उन सबका आदि-स्रोत वेद है।

सृष्टि-उत्पत्ति पर जब मानव संसार में आया तो यह विश्व उसके लिए एक पहेली था। उसे पता नहीं था कि यह संसार क्या है ? वह कहाँ से आया है ? क्यों आया है और उसे किधर जाना है ? उस समय परमपिता परमात्मा ने मानव-बुद्धि को प्रबुद्ध करने के लिए वेद-ज्ञान दिया। अथर्ववेद का ज्ञान अंगिरा ऋषि के हृदय में प्रकट हुआ था।

अथर्ववेद में ज्ञान, कर्म एवं उपासना तीनों का सुन्दर सम्मिश्रण है। इसमें जहाँ प्राकृतिक रहस्यों का उद्घाटन है वहाँ गूढ़ आध्यात्मिक रहस्यों का विवेचन भी है। यह धर्म, अर्थ, काम और मोक्ष के साधनों की कुञ्जी है। जीवन एक सतत संग्राम है। अथर्ववेद जीवन-संग्राम में सफलता प्राप्त करने के उपाय बताता है।

Adv. Vidit Chauhan Collection, Noida

Digitized by Agamnigam Foundation, Chandigarh

अथर्ववेद युद्ध और शान्ति का वेद है। शरीर में शान्ति किस प्रकार रहे उसके लिए नाना प्रकार की ओषधियों का वर्णन है। परिवार में शान्ति किस प्रकार रह सकती है उसके लिए इसमें दिव्य नुस्खे हैं। राष्ट्र और विश्व में शान्ति किस प्रकार रह सकती है उन उपायों का वर्णन है। यदि कोई देश शान्ति को भंग करना चाहे तो उससे किस प्रकार लोहा लेना, किस प्रकार युद्ध करना, शत्रु के आक्रमणों से अपने को किस प्रकार बचाना और उनके कुचक्रों को किस प्रकार समाप्त करना—इत्यादि सभी बातों का विशद् वर्णन अथर्ववेद में है।

अथर्ववेद में कृत्या और अभिचार आदि शब्दों को देखकर कुछ लोग इसे जादू और टोनों का वेद मानते हैं परन्तु यह बात ठीक नहीं। कृत्या आदि शब्द विशेष प्रकार के अस्त्र-शस्त्रों के नाम हैं।

अथर्ववेद को ब्रह्मवेद, अथर्वाङ्गिरसः, छन्दवेद, अमृतवेद और आत्मवेद भी कहते हैं।

अथर्ववेद में २० काण्ड, १११ अनुवाक, ७३१ सूक्त और ५९७७ मन्त्र हैं। गणना-प्रकार के अनुसार मन्त्र-संख्या के सम्बन्ध में विद्वानों में मतभेद भी है।

अथर्ववेद की नौ शाखाएँ मानी जाती हैं। इसका ब्राह्मण गोपथ है और उपवेद अथर्ववेद है।

Adv. Vidit Chauhan Collection, Noida

Digitized by Agamnigam Foundation, Chandigarh
इस संकलन में पं० श्री क्षेमकरणदासजी त्रिवेदी द्वारा रचित भाष्य से १०० मन्त्रों का चयन किया गया है। मन्त्रों के अन्त में छपे अंक काण्ड, सूक्त और मन्त्र के बोधक हैं।

परमपिता परमात्मा की असीम अनुकम्पा से चारों वेदों के शतक प्रकाशित हो गये। घर-घर में वेद की पुस्तक हों। हम वेद पढ़ें और वेद हमारे जीवन का अंग बनें तदर्थ ही यह प्रयास है। यदि जनता ने इन शतकों को अपनाया तो हम वेद के सम्बन्ध में इसी प्रकार का महत्त्वपूर्ण और सुन्दर साहित्य देने का प्रयास करेंगे। यदि कहीं कोई त्रुटि दृष्टिगोचर हो तो हमें सूचित करें जिससे आगामी संस्करण में सुधार हो सके।

वेद सदन
एच १/२ माडल टाउन,
दिल्ली-९

जगदीश्वरानन्द सरस्वती

Adv. Vidit Chauhan Collection, Noida

Digitized by Agamnigam Foundation, Chandigarh

॥ मन्त्रानुक्रम ॥

५९	अकामो धीरो	६४	इन्द्र प्रेहि पुरस्त्वं
२८	अक्ष्यौ नि	५५	इन्द्रं मित्रं
४३	अक्ष्यौ नौ मधुसंका	७०	इहैवस्तं मा वि
७२	अघोरचक्षुरपतिघ्नी	३२	ईर्ष्याया ध्राजि
३६	अनमित्रं नो	२५	उग्रो राजा मन्य
११	अनुव्रतः पितुः	१७	उतदेवा अवहितं
८४	अनुहवं परिहवं	४६	उत्क्रामतः
२९	अनुहूतः पुनरेहि	६३	उत्तिष्ठतः संनह्य
५३	अपाङ् प्राङेति	४७	उद्यानं ते पुरुष
८९	अयुतोहमयुतो	६७	उद्यंस्त्वं देवसूयं
९७	अर्चंत प्रार्चंत	७८	ऋतेन गुप्त ऋतु
२३	अवजहि यातुधा	५२	एष वा अतिथिः
३३	अव मा पाप्मन्त्सृ	६	एह्यश्मानमा
९३	अव्यसश्च	५०	कस्तं प्रवेद
१९	अहमेव स्वयमिदं	९०	कालो अश्वो वह
८३	आकूतिं देवीं	४४	कृतं मे दक्षिणे
३	आदङ्गा कुविदङ्गा	९५	गोभिष्टरेमामतिं
३७	आयने ते परायणं	९१	तनूस्तन्वा मे सहे
८५	आयुषायुः कृतां	८	त्वां विशो वृणतां
१५	इदं विद्वानाञ्जन	५८	त्वं स्त्री त्वं पुमान

Adv. Vidit Chauhan Collection, Noida

Digitized by Agamnigam Foundation, Chandigarh

९८ त्वं हि नः पिता
१६ दुहे सायं दुहे
३० दोषो गाय बृहद्गाय
३८ द्रुपदादिव मुमुचान
४१ धाता दधातु नो
३९ धीती वा ये अनयन्
२७ नव प्राणान्नवभिः
१४ नैनं प्राप्नोति
२२ परोऽपेह्यसमृद्धे
९ पूर्णं नारि प्र भर
९९ पौरों अश्वस्य पुरु
७७ प्रजापतेरावृतो
६१ प्राण मा मत्पर्या
९२ प्रियं मा कृणु
२४ ब्रह्मगवी पच्य
६२ ब्रह्मचर्येण तपसा
८७ भद्रमिच्छन्त ऋषयः
४० भद्रादधिश्रेयः
२ मधुमन्मे निक्रमणं
२० ममाग्ने वर्चो
२१ मह्यं यजन्तां मम
६० मा नो हिंसीरधि
६९ मा प्र गाम पथो
१२ मा आसा आसतं
७४ मूर्धाहं रयीणां
७ यथा द्यौश्च पृथिवी
५१ यथा मक्षा इदं
५६ यथा वातश्च्या
३१ यथा वृक्षं लिबुजा
१ यदि नो गां हंसि
८१ यमो नो गातुं प्रथमजा
०५ यशा इन्द्रो यशा
६८ यश्च गां पदा
१८ यस्तिष्ठति चरति
५७ यस्य भूमिः प्रमा
९६ यस्याश्वासः
६६ यो अस्या ऊधो
१०० यो जाम्या अप्र
८६ वर्च आ धेहि मे
७५ वस्योभूयाय
६५ वैश्वदेवीं
१३ व्याघ्रं दत्वतां
१० शतहस्त समाहर
४८ शिवौ ते स्तां व्रीहि
७६ शुक्रोऽसि भ्राजो
४५ शुम्भनी द्यावा
८२ शं तप मातितपो
९४ सत्यं बृहदृतमुग्रं

Adv. Vidit Chauhan Collection, Noida

Digitized by Agamnigam Foundation, Chandigarh

४ समास्त्वाग्न ऋतवो

७१ सम्राड्येधि

८० सरस्वतीं देव

२६ सर्वेषां च क्रिमी

८८ सिन्धो गर्भोसि वि

३४ सिंहे व्याघ्र उत

४९ सुविज्ञानं चिकितुषे

७३ सुश्रुतौ कर्णौ

५४ सूयवसाद्भगवती

७९ सो चिन्नु भद्रा

५ स्रक्त्योऽसि प्रति

४२ स्वाक्तं मे द्यावापृथिवी

□

Adv. Vidit Chauhan Collection, Noida

Digitized by Agamnigam Foundation, Chandigarh

: १ :

गो-हत्यारे को दण्ड

यदि नो गां हंसि यद्यश्वं यदि पूरुषम् ।
तं त्वा सीसेन विध्यामो यथा नोऽसो अवीरहा ॥
१ । १६ । ४ ॥

पदार्थः—(यदि) जो (नः) हमारी (गाम्) गाय को, (यदि) जो (अश्वम्) घोड़े को और (यदि) जो (पुरुषम्) पुरुष को (हंसि) तू मारता है (तम्, त्वा) उस तुझको (सीसेन) बन्धन काटनेहारे सामर्थ्य 'ब्रह्मज्ञान' से (विध्यामः) हम बेधते हैं (यथा) जिससे तू (नः) हमारे (अवीरहा असः) वीरों का नाश करनेहारा न होवे ।

भावार्थः—मनुष्य वर्त्तमान क्लेशों को देखकर आनेवाले क्लेशों को यत्नपूर्वक रोककर आनन्द भोगें ।

Adv. Vidit Chauhan Collection, Noida

Digitized by Agamnigam Foundation, Chandigarh

: २ :

मधुरता

मधुमन्मे निक्रमणं मधुमन्मे परायणम् ।
वाचा वदामि मधुमद् भूयासं मधुसंदृशः ।।
१ । ३४ । ३ ।।

पदार्थः—(मे) मेरा (निक्रमणम्) पास आना (मधुमत्) बहुत ज्ञानवाला वा रस में भरा हुआ और (मे) मेरा (परायणम्) बाहिर जाना (मधुमत्) बहुत ज्ञानवाला वा रस-भरा हो। (वाचा) वाणी से मैं (मधुमत्) बहुत ज्ञानवाला वा रसयुक्त (वदामि) बोलूं और मैं (मधु संदृशः) ज्ञान रूपवाला, मधुर रूपवाला (भूयासम्) रहूँ ।

भावार्थः—जो मनुष्य घर, सभा, राजद्वार, देश, परदेश आदि में आने-जाने, निरीक्षण, परीक्षण, अभ्यास आदि समस्त चेष्टाओं और वाणी से बोलने अर्थात् शुभ गुणों के ग्रहण और उपदेश करने में (मधुमान्) ज्ञानवान् वा रस से भरे अर्थात् प्रेम में मग्न होते हैं, वही महात्मा (मधुसन्दृशः) रसीले रूप-वाले अर्थात् संसार-भर में शुभकर्मी होकर उपकार करते हैं ।

Adv. Vidit Chauhan Collection, Noida

Digitized by Agamnigam Foundation, Chandigarh

: ३ :

ओषधियों की ओषधि

आदङ्गा कुविदङ्गा शतं या भेषजानि ते ।
तेषामसि त्वमुत्तममनास्रावमरोगणम् ॥
२ । ३ । २ ॥

पदार्थः—(अंग) हे अंग ! (अंग) हे 'ब्रह्म' ! (आत्) फिर (कुवित्) अनेक प्रकार से (या=यानि) जो (ते) तेरी 'बनाई' (शतम्) सौ [असंख्य] (भेषजानि) भय-निवर्त्तक औषधें हैं (तेषाम्) उनमें से (त्वम्) तू आप (उत्तमम्) उत्तम गुणवाला (अनास्रवम्) बड़े क्लेश का हटानेवाला और (अरोगणम्) रोग दूर करनेवाला (असि) है ।

भावार्थः—संसार की सब ओषधियों में क्लेशनाशक और रोग-निवर्त्तक शक्ति का देनेवाला वही ओषधियों का ओषधि परब्रह्म है ।

Adv. Vidit Chauhan Collection, Noida

Digitized by Agamnigam Foundation, Chandigarh

: ४ :

प्रकाशमान बन और प्रकाश फैला

समास्त्वाग्न ऋतवो वर्धयन्तु
संवत्सरा ऋषयो यानि सत्या ।
सं दिव्येन दीदिहि रोचनेन विश्वा
आ भाहि प्रदिशश्चतस्रः ॥ २ । ६ । १ ॥

पदार्थः—(अग्ने) हे अग्निवत् तेजस्वी विद्वन् ! (समाः) अनुकूल (ऋतवः) ऋतुएँ और (ऋषयः) ऋषि लोग और (यानि) जो (सत्या=सत्यानि तानि) सत्य कर्म हैं 'वे सब' (त्वा) तुझको (वर्धयन्तु) बढ़ावें। (दिव्येन) अपनी दिव्य वा मनोहर (रोचनेन) झलक से (सम्) भले प्रकार (दीदिहि) प्रकाशमान हो और (विश्वाः) सब (चतस्राः) चारों (प्रदिशः) महादिशाओं को (आ भाहि) प्रकाशमान कर ।

भावार्थः—मनुष्य बड़े प्रयत्न से अपने समय को यथावत् उपयोग से अनुकूल बनावें। ऋषि आप्त-पुरुषों से मिलकर उत्तम शिक्षा प्राप्त करें और सदा सत्य-संकल्पी, सत्यवादी और सत्कर्मी रहें। इस प्रकार संसार में उन्नति करें और कीर्तिमान् होकर प्रसन्नचित्त रहें।

Adv. Vidit Chauhan Collection, Noida

Digitized by Agamnigam Foundation, Chandigarh

: ५ :

प्रगतिशील आनन्द पाते हैं

स्रक्त्योऽसि प्रतिसरोऽसि प्रत्यभिचरणोऽसि ।
आप्नुहि श्रेयांसमति समं क्राम ।। २ । ११ । २ ।।

पदार्थ:—तू (स्रक्त्य:) गतिशील (असि) है, (प्रतिसर:) प्रत्यक्ष चलनेवाला (असि) है और (प्रत्यभिचरण:) अभिचार 'दुष्टकर्म' का हटानेवाला (असि) है । (श्रेयांसम्) अधिक गुणी 'परमेश्वर वा मनुष्य' को (आप्नुहि) तू प्राप्त कर (समम्) तुल्य बलवाले 'मनुष्य' से (अति=अतीत्य) बढ़कर (क्राम) पद आगे बढ़ा ।

भावार्थ:—जो पुरुषार्थी मनुष्य निष्कपट, सरल-स्वभाव होकर अग्रगामी होता है वह संकटों को हटाकर आनन्द प्राप्त करता है ।

Adv. Vidit Chauhan Collection, Noida

Digitized by Agamnigam Foundation, Chandigarh

: ६ :

पत्थर समान शरीर

एह्यश्मानमा तिष्ठाश्मा भवतु ते तनूः ।
कृण्वन्तु विश्वे देवा आयुष्टे शरदः शतम् ॥
२ । १३ । ४ ॥

पदार्थः—'हे ब्रह्मचारिन्' (एहि=आ+इहि) तू आ, (अश्मानम्) इस शिला पर (आ+तिष्ठ) चढ़, (ते) तेरा (तनूः) तन 'शरीर' (अश्मा) शिला 'शिला जैसा दृढ़' (भवतु) होवे । (विश्वे) सब (देवाः) उत्तम गुणवाले 'पुरुष और पदार्थ' (ते) तेरी (आयुः) आयु को (शतम्) सौ (शरदः) शरद् ऋतुओं तक (कृण्वन्तु) 'दीर्घ' करें ।

भावार्थः—ब्रह्मचारी को शिक्षा दें कि वह यथा-नियम पथ्य-सेवन, व्यायाम, ब्रह्मचर्य और पौरुष करके अपने शरीर को दृढ़ और स्वस्थ रक्खे और विद्वानों के मेल और उत्तम पदार्थों के सेवन से पूर्णायु भोगकर संसार का उपकार करे ।

Adv. Vidit Chauhan Collection, Noida

Digitized by Agamnigam Foundation, Chandigarh

: ७ :

निर्भयता

यथा द्यौश्च पृथिवी च न बिभीतो न रिष्यतः ।
एवा मे प्राण मा बिभेः ॥ २ । १५ । १ ॥

पदार्थः—(यथा) जैसे (च) निश्चय करके (द्यौः) आकाश (च) और (पृथिवी) पृथिवी दोनों (न) न (रिष्यतः) दुःख देते हैं और (न) न (बिभीतः) डरते हैं (एव) ऐसे ही (मे) मेरे (प्राण) प्राण ! तू (मा बिभेः) मत डर ।

भावार्थः—यह आकाश और पृथिवी आदि लोक परमेश्वर के नियम-पालन से अपने-अपने स्थान और मार्ग में स्थिर रहकर जगत् का उपकार करते हैं, ऐसे ही मनुष्य ईश्वर की आज्ञा मानने से पापों को छोड़कर और सुकर्मों को करके सदा निर्भय और सुखी रहता है ।

Adv. Vidit Chauhan Collection, Noida

Digitized by Agamnigam Foundation, Chandigarh

: ८ :

राजा का चुनाव

त्वां विशो वृणतां राज्याय
त्वामिमाः प्रदिशः पञ्च देवीः ।
वर्ष्मन् राष्ट्रस्य ककुदि श्रयस्व
ततो न उग्रो वि भजा वसूनि ॥ ३ । ४ । २ ॥

पदार्थः—हे राजन् ! (त्वाम्) तुझको (राज्याय) राज्य के लिए (विशः) प्रजाएँ और (त्वाम्) तुझको ही (इमाः) यह सब (पञ्च) विस्तीर्ण वा पाँच (देवीः) दिव्य गुणवाली (प्रदिशः) महादिशाएँ (वृणताम्) स्वीकार करें। (राष्ट्रस्य) राज्य के (वर्ष्मन्) ऐश्वर्ययुक्त वा ऊँचे (ककुदि) शिखर पर (श्रयस्व) आश्रय ले। (ततः) फिर (उग्रः) तेजस्वी तू (नः) हमारे लिये (वसूनि) धनों का (वि, भज) विभाग कर।

भावार्थः—राजा को सब प्रजागण चुनें और सब मनुष्य आदि प्रजा और चारों पूर्वादि दिशाओं और पाँचवीं ऊपर-नीचे की दिशा के पदार्थ [जैसे आकाश-मार्ग और भूगर्भ आदि के पदार्थ] सब राजा के आधीन रहें और वह बड़ा ऐश्वर्यवान् होकर राजभक्त सुपात्रों को विद्या और सुवर्ण आदि धनों का दान करता रहे।

Adv. Vidit Chauhan Collection, Noida

Digitized by Agamnigam Foundation, Chandigarh

: ६ :

गृहपत्नी के कर्त्तव्य

पूर्णं नारि प्र भर कुम्भमेतं
घृतस्य धारामतेन संभृताम् ।
इमां पातॄनमृतेना समङ्ग्धीष्टा
पूर्तमभि रक्षात्येनाम् ।। ३ । १२ । ८ ।।

पदार्थः—(नारि) हे नर का हित करनेवाली गृहपत्नी ! (एतम्) इस (पूर्णम्) पूरे (कुम्भम्) घड़े में से (अमृतेन) अमृत 'हितकारी पदार्थ' से (संभृताम्) भरी हुई (घृतस्य) घी की (धाराम्) धारा को (प्र भर) अच्छे प्रकार ला । (इमाम्) इस 'शाला' को और (पातॄन्) पान-कर्त्ताओं वा रक्षकों को (अमृतेन) अमृत से (सम्) अच्छे प्रकार (अङ्ग्धि) पूर्ण कर (इष्टा-पूर्तम्) यज्ञ और वेदों का अध्ययन, अन्न दानादि पुण्य कर्म (एनाम्) इस 'शाला' की (अभि) सब ओर से (रक्षाति) रक्षा करे ।

भावार्थः—गृहपत्नी घर को घृत-दुग्धादि अमृत पदार्थों से परिपूर्ण रखकर सब कुटुम्बियों को स्वस्थ और पुष्ट रक्खे और सब स्त्री-पुरुष धार्मिक पुरुषार्थी और धनी होकर चोर-उचक्के सिंहादि दुष्टों से रक्षा करते हुए बस्ती को बसाये रक्खें ।

Adv. Vidit Chauhan Collection, Noida

Digitized by Agamnigam Foundation, Chandigarh

: १० :

खूब कमा

शतहस्त समाहर सहस्रहस्त सं किर ।
कृतस्य कार्यस्य चेह स्फातिं समावह ।।
३ । २४ । ५ ।।

पदार्थः—(शतहस्त) हे सैकड़ों हाथोंवाले ! 'मनुष्य ! धान्य को" (समाहर) बटोरकर ला और (सहस्रहस्त) हे सहस्रों हाथोंवाले ! (सम्) अच्छे प्रकार से (किर) फैला (च) और (कृतस्य) किये हुए और (कार्यस्य) कर्त्तव्य कर्म की (स्फातिम्) बढ़ती को (इह) यहाँ पर (समावह) मिलाकर ला ।

भावार्थः—मनुष्य सैकड़ों और सहस्रों प्रकार से कर्म-कुशल होकर और सहस्रों कर्म-कुशलों से मिल-कर धन-धान्य एकत्रित करे और उत्तम कर्मों में व्यय करके आगा-पीछा सोचकर सदैव उन्नति करता रहे ।

Adv. Vidit Chauhan Collection, Noida

Digitized by Agamnigam Foundation, Chandigarh

: ११ :

आदर्श गृहस्थ

अनुव्रतः पितुः पुत्रो मात्रा भवतु संमनाः ।
जाया पत्ये मधुमतीं वाचं वदतु शन्तिवाम् ।।
३ । ३० । २ ।।

पदार्थः—(पुत्रः) कुलशोधक पवित्र, बहुरक्षक वा नरक से बचानेवाला पुत्र 'सन्तान' (पितुः) पिता के (अनुव्रतः) अनुकूल व्रती होकर (मात्रा) माता के साथ (संमनाः) एक मनवाला (भवतु) होवे । (जाया) पत्नी (पत्ये) पति से (मधुमतीम्) जैसे मधु में सनी और (शन्तिवाम्) शान्ति से भरी (वाचम्) वाणी (वदतु) बोले ।

भावार्थः—सन्तान माता-पिता के आज्ञाकारी और माता-पिता सन्तानों के हितकारी, पत्नी और पति आपस में मधुरभाषी और सुखदायी हों । यही वैदिक कर्म आनन्द-मूल है ।

Adv. Vidit Chauhan Collection, Noida

Digitized by Agamnigam Foundation, Chandigarh

: १२ :

भाई-बहिन द्वेष न करें

मा भ्राता भ्रातरं द्विक्षन्मा स्वसारमुत स्वसा।
सम्यञ्चः सव्रता भूत्वा वाचं वदत भद्रया ॥
३ । ३० । ३ ॥

पदार्थः—(भ्राता) भ्राता (भ्रातरम्) भ्राता से (मा द्विक्षत्) द्वेष न करे (उत) और (स्वसा) बहिन (स्वसारम्) बहिन से भी (मा) नहीं। (सम्यञ्चः) एक मतवाले और (सव्रताः) एकव्रती (भूत्वा) होकर (भद्रया) कल्याणी रीति से (वाचम्) वाणी (वदत) बोलो।

भावार्थः—भाई-भाई, बहिन-बहिन और सब नियमपूर्वक मेल से वैदिक-रीति पर चलकर सुख भोगें।

Adv. Vidit Chauhan Collection, Noida

Digitized by Agamnigam Foundation, Chandigarh

: १३ :

रोग और शत्रु-नाश

व्याघ्रं दत्वतां वयं प्रथमं जम्भयामसि ।
आदु ष्टेनमथो अहिं यातुधानमथो वृकम् ॥
४ । ३ । ४ ॥

पदार्थः—(दत्वताम्) दाँतोंवालों में से (प्रथमम्) पहले (व्याघ्रम्) बाघ (आत् उ) और भी (अहिम्) साँप, (अथो) और भी (वृकम्) भेड़िये (स्तेनम्) चोर (अथो) और भी (यातुधानम्) पीड़ा देनेवाले राक्षस को (वयम्) हम (जम्भयामसि) नष्ट करते हैं ।

भावार्थः—मनुष्य प्रयत्नपूर्वक दुष्ट जन्तुओं और उनके समान दुष्ट स्वभाववाले चोर-डाकुओं और रोगों तथा दोषों को नष्ट करें ।

Adv. Vidit Chauhan Collection, Noida

Digitized by Agamnigam Foundation, Chandigarh

: १४ :

ईश्वर-प्राप्ति से दुःख-निवृत्ति

**नैनं प्राप्नोति शपथो न कृत्या नाभिशोचनम् ।
नैनं विष्कन्धमश्नुते यस्त्वा बिभर्त्याञ्जन ।।**
४ । ६ । ५ ।।

पदार्थः—(न) न तो (एनम्) इस 'पुरुष' को (शपथः) क्रोध वचन (न) न (कृत्या) हिंसा-क्रिया और (न) न (अभिशोचनम्) महाशोक (प्राप्नोति) पहुँचता है और (न) न (एनम्) इसको (विष्कन्धम्) विघ्न (अश्नुते) व्यापता है (यः) जो 'पुरुष' (आञ्जन) हे संसार को व्यक्त करनेवाले ब्रह्म ! (त्वा) तुझको (बिभर्त्ति) धारण करता है ।

भावार्थः—जो मनुष्य शुद्ध अन्तःकरण से परमात्मा को आत्मा में स्थिर करता है उसको आध्यात्मिक शान्ति होने से आधिभौतिक और आधिदैविक शान्ति भी मिलती है ।

Adv. Vidit Chauhan Collection, Noida

Digitized by Agamnigam Foundation, Chandigarh

: १५ :

सत्य-भाषण

इदं विद्वानाञ्जन सत्यं वक्ष्यामि नानृतम् ।
सनेयमश्वं गामहमात्मानं तव पूरुष ॥
४ । ६ । ७ ॥

पदार्थः—(आञ्जन) हे संसार को व्यक्त करनेवाले ब्रह्म ! तेरे (इदम्) परम ऐश्वर्य को (विद्वान्) जानता हुआ मैं (सत्यम्) सत्य (वक्ष्यामि) बोलूंगा (अनृतम्) असत्य (न) नहीं । (पुरुष) हे सबके अगुआ पुरुष परमेश्वर ! (तव) तेरे दिये हुए (अश्वम्) घोड़े, (गाम्) गौ वा भूमि और (आत्मानम्) आत्मबल को (अहम्) मैं (सनेयम्) सेवन करूँ ।

भावार्थः—मनुष्य परमेश्वर की महिमा देखकर सदा सत्य ही बोले और पुरुषार्थपूर्वक सब पदार्थों से उपकार लेवे ।

Adv. Vidit Chauhan Collection, Noida

Digitized by Agamnigam Foundation, Chandigarh

: १६ :

अक्षय भण्डार

दुहे सायं दुहे प्रातर्दुहे मध्यन्दिनं परि।
दोहा ये अस्य संयन्ति तान् विद्मानुपदस्वतः ॥
४।११।१२॥

पदार्थः—वह 'परमेश्वर' (सायम्) सायंकाल में (परि) सब ओर से (दुहे=दुग्धे) पूर्ण करता है (प्रातः) प्रातःकाल (दुहे) पूर्ण करता है (मध्यंदिनम्) मध्याह्न में (दुहे) पूर्ण करता है (अस्य) सर्वव्यापक वा सर्वरक्षक विष्णु के (ये) जो (दोहाः) पूर्ति-प्रवाह (संयन्ति) बटुरते रहते हैं (तान्) उनको (अनुपदस्वतः) अक्षय (विद्म) हम जानते हैं।

भावार्थः—परमेश्वर का सदा अक्षय भण्डार है ऐसा जानकर मनुष्य विज्ञानपूर्वक आगे बढ़ता है।

Adv. Vidit Chauhan Collection, Noida

Digitized by Agamnigam Foundation, Chandigarh

: १७ :

गिरे हुओं को उठाना

उत देवा अवहितं देवा उन्नयथा पुनः।
उतागश्चक्रुषं देवा देवा जीवयथा पुनः॥
४।१३।१॥

पदार्थः—(देवाः) हे व्यवहार-कुशल (देवाः) विद्वान् लोगो! (अवहितम्) अधोगत पुरुष को (उत) अवश्य (पुनः) फिर (उन्नयथ) तुम उठाते हो (उत) और भी (देवाः) हे दानशील (देवाः) महात्माओ! (आगः) अपराध (चक्रुषम्) करनेवाले प्राणी को (पुनः) फिर (जीवयथ) तुम जिलाते हो।

भावार्थः—महात्मा लोग स्वभाव से ही अधोगत पुरुषों को ऊँचा करते और मृतक समान अपराधियों को पाप से छुड़ाकर उनका जीवन सफल कराते हैं। मनुष्य सत्पुरुषों के सत्संग से अपने आत्मिक और शारीरिक दोषों को त्यागकर जीवन सुधारें।

Adv. Vidit Chauhan Collection, Noida

Digitized by Agamnigam Foundation, Chandigarh

: १८ :

घट-घटवासी प्रभु

यस्तिष्ठति चरति यश्च वञ्चति
यो निलायं चरति यः प्रतङ्कम् ।
द्वौ संनिषद्य यन्मन्त्रयेते
राजा तद्वेद वरुणस्तृतीयः ।।
४ । १६ । २ ।।

पदार्थः—(यः) जो पुरुष (तिष्ठति) खड़ा होता है वा (चरति) चलता है (च) और (यः) जो पुरुष (वञ्चति) ठगी करता है और (यः) जो (निलायम्) भीतर घुसकर और (यः) जो (प्रतङ्कम्) बाहिर निकलकर (चरति) काम करता है और (द्वौ) दो जने (सं निषद्य) एक साथ बैठकर (यत्) जो कुछ (मन्त्रयेते) कानाफूसी करते हैं (तृतीयः) तीसरा (राजा) राजा (वरुणः) वरणीय वा दुष्ट-निवारक वरुण परमेश्वर (तत्) उसे (वेद) जानता है ।

भावार्थः—परमेश्वर प्राणियों के गुप्त से गुप्त कर्मों को सर्वथा जानता और उनको यथावत् फल देता है ।

Adv. Vidit Chauhan Collection, Noida

Digitized by Agamnigam Foundation, Chandigarh

: १६ :

वह जिसको चाहता है

अहमेव स्वयमिदं वदामि
जुष्टं देवानामुत मानुषाणाम् ।
यं कामये तं तमुग्रं कृणोमि
तं ब्रह्माणं तमृषिं तं सुमेधाम् ॥ ४ । ३० । ३ ॥

पदार्थः—(अहम्) मैं (एव) ही (स्वयम्) आप (देवानाम्) सूर्यादि लोकों (उत) और (मानुषाणाम्) मननशील मनुष्यों का (जुष्टम्) प्रिय (इदम्) यह वचन (वदामि) कहता हूँ 'अर्थात्' (यम्) जिस-जिसको (कामये) मैं चाहता हूँ (तम्-तम्) उस-उसको ही 'कर्मानुसार' (उग्रम्) तेजस्वी (तम्) उसको ही (ब्रह्माणम्) वृद्धिशील ब्रह्मा (तम्) उसी को (ऋषिम्) सन्मार्ग-दर्शक ऋषि (तम्) उसी को (सुमेधाम्) उत्तम बुद्धिवाला (कृणोमि) बनाता हूँ ।

भावार्थः—परमात्मा सब लोकों और प्राणियों को शरण में रखकर उपदेश करता है कि मैं अपने आज्ञाकारियों को प्रीतिपूर्वक उत्तम गति देता हूँ ।

Adv. Vidit Chauhan Collection, Noida

Digitized by Agamnigam Foundation, Chandigarh

: २० :

संग्राम-विजय

ममाग्ने वर्चो विहवेष्वस्तु वयं त्वेन्धानास्तन्वं पुषेम। मह्यं नमन्तां प्रदिशश्चतस्रस्त्वयाध्यक्षेण पृतना जयेम॥ ५। ३। १॥

पदार्थः—(अग्ने) हे सर्वव्यापक परमात्मन्! (विहवेषु) संग्रामों में (मम) मेरा (वर्चः) प्रकाश (अस्तु) होवे। (वयम्) हम लोग (त्वा) तुझको (इन्धानः) प्रकाशित करते हुए (तन्वम्) अपना शरीर (पुषेम) पोषें। (चतस्रः) चारों (प्रदिशः) बड़ी दिशाएँ (मह्यम्) मेरे लिए (नमन्ताम्) नमें (त्वया) तुझ (अध्यक्षेण) अध्यक्ष के साथ (पृतनाः) संग्रामों को (जयेम) हम जीतें।

भावार्थः—मनुष्य परमेश्वर में विश्वास करके अपने सब बाहरी और भीतरी शत्रुओं को जीतकर आनन्द भोगें।

Adv. Vidit Chauhan Collection, Noida

Digitized by Agamnigam Foundation, Chandigarh

: २१ :

पाप-त्याग, गुण-ग्रहण

मह्यं यजन्तां मम यानीष्टा-
कूतिः सत्या मनसो मे अस्तु ।
एनो मा नि गां कतमच्चनाहं
विश्वेदेवा अभि रक्षन्तु मेह ॥ ५ । ३ । ४ ॥

पदार्थः—(मम) मेरे (यानि) पाने योग्य (इष्टा) इष्ट कर्म (मह्यम्) मुझको (यजन्ताम्) मिलें (मे) मेरे (मनसः) मन का (आकूतिः) संकल्प (सत्या) सत्य (अस्तु) होवे (अहम्) मैं (कतमत् चन) किसी भी (एनः) पाप-कर्म को (मा नि गाम्) कभी न प्राप्त होऊँ (विश्वे) सब (देवाः) उत्तम गुण (मा) मेरी (इह) इस विषय में (अभि) सब ओर से (रक्षन्तु) रक्षा करें।

भावार्थः—मनुष्य शुद्ध अन्तःकरण से विचार-पूर्वक शुभ कर्मों की प्रतिज्ञा करके पूरा करें और छल-कपट आदि छोड़कर सब उत्तम-उत्तम गुण प्राप्त करें।

Adv. Vidit Chauhan Collection, Noida

Digitized by Agamnigam Foundation, Chandigarh

: २२ :

असमृद्धि दूर हट

परोऽपेह्यसमृद्धे वि ते हेतिं नयामसि ।
वेद त्वाहं निमीवन्तीं नितुदन्तीमराते ॥
५ । ७ । ७ ॥

पदार्थः—(असमृद्धे) हे असमृद्धे ! (परः) परे (अप इह) चली जा (ते) तेरी (हेतिम्) बरछी को (वि नयामसि) हम अलग हटाते हैं (अराते) हे अदान शक्ति ! 'निर्धनता' ! (अहम्) मैं (त्वा) तुझको (निमीवन्तीम्) निर्बल करनेवाली और (नितुदन्तीम्) भीतर चुभनेवाली (वेद) जानता हूँ ।

भावार्थः—मनुष्य महादुःखदायिनी निर्धनता को प्रयत्नपूर्वक दूर हटायें ।

Adv. Vidit Chauhan Collection, Noida

Digitized by Agamnigam Foundation, Chandigarh

: २३ :

दुर्गुण-नाश

अव जहि यातुधानानव कृत्याकृतं जहि ।
अथो यो अस्मान् दिप्सति तमु त्वं जह्योषधे ॥
५ । १४ । २ ॥

पदार्थः—(यातुधानान्) पीड़ा देनेवालों का (अव जहि) नाश कर दे। (अथो) और भी (यः) जो (अस्मान्) हमें (दिप्सति) मारना चाहता है (तम् उ) उसे भी (त्वम्) तू (ओषधे) हे अन्न आदि ओषधि के समान तापनाशक ! (जहि) नाश कर।

भावार्थः—मनुष्य शुभगुण प्राप्त करके दुर्गुणों का नाश करे, जैसे अन्न-सेवन से भूख का नाश होता है।

Adv. Vidit Chauhan Collection, Noida

Digitized by Agamnigam Foundation, Chandigarh

: २४ :

वेद-विद्यारहित राष्ट्र नष्ट

ब्रह्मगवी पच्यमाना यावत् साभि विजङ्गहे।
तेजो राष्ट्रस्य निर्हन्ति न वीरो जायते वृषा॥
५। १९। ४॥

पदार्थः—(सा) वह (ब्रह्मगवी) ब्रह्मवाणी (पच्यमाना) पचाई 'तपाई' जाती हुई (यावत्) जब तक (अभि) चारों ओर (विजङ्गहे) फड़फड़ाती रहती है, वह (राष्ट्रस्य) राज्य का (तेजः) तेज (निर्हन्ति) मिटा देती है और (न वीरः) न कोई वीर पुरुष (वृषा) ऐश्वर्यवान् (जायते) उत्पन्न होता है।

भावार्थः—जहाँ वेद-विद्या का निरादर होता है, वह राज्य नष्ट हो जाता है, और सब लोग निर्बल हो जाते हैं।

Adv. Vidit Chauhan Collection, Noida

Digitized by Agamnigam Foundation, Chandigarh

: २५ :

ब्राह्मण के अपमान से राष्ट्र नष्ट

उग्रो राजा मन्यमानो ब्राह्मणं यो जिघत्सति ।
परा तत् सिच्यते राष्ट्रं ब्राह्मणो यत्र जीयते ॥
५ । १९ । ६ ॥

पदार्थः—(यः) जो (उग्रः) प्रचण्ड (राजा) राजा (मन्यमानः) गर्व करता हुआ (ब्राह्मणम्) ब्राह्मण को (जिघत्सति) नष्ट करना चाहता है (तत्) वह (राष्ट्रम्) राज्य (परा सिच्यते) बह जाता है (यत्र) जहाँ (ब्राह्मणः) वेदवेत्ता (जीयते) दबाया जाता है ।

भावार्थः—वेदवेत्ताओं को सतानेवाले राजा का राज्य सर्वथा नष्ट हो जाता है ।

Adv. Vidit Chauhan Collection, Noida

Digitized by Agamnigam Foundation, Chandigarh

: २६ :

कृमि-नाश

सर्वेषां च क्रिमीणां सर्वासां च क्रिमीणाम् ।
भिनद्म्यश्मना शिरो दहाम्यग्निना मुखम् ।।
५ । २३ । १३ ।।

पदार्थः—(च) और (सर्वेषाम्) सब (क्रिमीणाम्) कीड़ों का (च) और (सर्वासाम्) सब (क्रिमीणाम्) कीड़ों की स्त्रियों का (शिरः) शिर (अश्मना) पत्थर से (भिनद्मि) मैं फोड़ता हूँ और (मुखम्) मुख (अग्निना) अग्नि से (दहामि) जलाता हूँ ।

भावार्थः—जैसे किसी वस्तु को अग्नि में जलाकर अथवा पत्थर पर तोड़कर नष्ट कर देते हैं, वैसे ही मनुष्य अपने बाहिरी और भीतरी दोषों का नाश करे ।

Adv. Vidit Chauhan Collection, Noida

Digitized by Agamnigam Foundation, Chandigarh

: २७

तीन सुख

नव प्राणान्नवभिः सं मिमीते
दीर्घायुत्वाय शतशारदाय।
हरिते त्रीणि रजते त्रीण्ययसि
त्रीणि तपसाविष्ठितानि ॥ ५ । २८ । १ ॥

पदार्थः—वह 'परमेश्वर' (नव) नौ (प्राणान्) जीवन-शक्तियों को (नवभिः) नौ 'इन्द्रियों' के साथ (शत-शारदाय) सौ शरद् ऋतुओं वाले (दीर्घायुत्वा) दीर्घ जीवन के लिए (सं मिमीते) यथावत् मिलाता है। 'उसी करके' (हरिते) दरिद्रता हरनेवाले पुरुषार्थ में (त्रीणि) तीनों (रजते) प्रिय होनेवाले प्रबन्ध 'वा रूप' में (त्रीणि) तीनों और (अयसि) प्राप्त योग्य कर्म 'वा सुवर्ण' में (त्रीणि) तीनों 'सुख' (तपसा) सामर्थ्य से (आविष्ठितानि) स्थित किये गये हैं।

भावार्थः—जिस परमात्मा ने नवद्वार अर्थात् दोनों कानों, दोनों नेत्रों, दोनों नथुनों, मुख, पायु और उपस्थ, नौ इन्द्रियोंवाले पुर (शरीर) में नौ शक्तियाँ रक्खी हैं उसी जगदीश्वर ने बताया है कि मनुष्य उत्तम पुरुषार्थ, उत्तम प्रबन्ध और उत्तम कर्म से चाँदी-सोना एकत्र करके तीन सुख अर्थात् अन्न, मनुष्य और पशुओं को बढ़ावे।

Adv. Vidit Chauhan Collection, Noida

Digitized by Agamnigam Foundation, Chandigarh

: २८ :

हिंसक प्राणियों का नाश

अक्ष्यौ नि विध्य हृदयं निविध्य
जिह्वां नि तृन्द्धि प्र दतो मृणीहि ।
पिशाचो अस्य यतमो जघासाग्ने
यविष्ठ प्रति तं शृणीहि ॥ ५ । २९ । ४ ॥

पदार्थः—(अक्ष्यौ) उसकी दोनों आँखें (निविध्य) छेद डाल, (हृदयम्) हृदय को (निविध्य) छेद डाल, (जिह्वाम्) जीभ (नितृन्द्धि) काट डाल और (दतः) दाँतों को (प्र मृणीहि) तोड़ दे। (यतमः) जिस किसी (पिशाचः) मांस खानेवाले पिशाच ने (अस्य) इसका (जघास) भक्षण किया है (यविष्ठ) हे महाबलवान् (अग्ने) विद्वन् पुरुष ! (तम्) उसको (प्रति) प्रत्यक्ष (शृणीहि) टुकड़े-टुकड़े कर दे।

भावार्थः—राजा हिंसक प्राणियों का यथावत् नाश करता रहे।

Adv. Vidit Chauhan Collection, Noida

Digitized by Agamnigam Foundation, Chandigarh

: २६ :

आगे बढ़ो

अनुहूतः पुनरेहि विद्वानुदयनं पथः ।
आरोहणमाक्रमणं जीवतो जीवतोऽयनम् ॥
५ । ३० । ७ ॥

पदार्थः—(पथः) मार्ग के (उदयनम्) चढ़ाव को (विद्वान्) जानता हुआ (अनुहूतः) प्रीति से बुलाया गया तू (पुनः) फिर (आ इह) आ (आरोहणम्) ऊपर और और (आक्रमणम्) आगे बढ़ना (जीवतो जीवतः) प्रत्येक जीव का (अयनम्) मार्ग है ।

भावार्थः—मनुष्य उन्नति के उपायों को जानकर सदा बढ़ता रहे जैसे कि चिउँटी आदि छोटे-छोटे जीव भी ऊँचे चढ़ने में लगे रहते हैं ।

Adv. Vidit Chauhan Collection, Noida

Digitized by Agamnigam Foundation, Chandigarh

: ३० :

प्रभु-गुणगान

दोषो गाय बृहद् गाय द्युमद्धेह्याथर्वण ।
स्तुहि देवं सवितारम् ॥ ६ । १ । १ ॥

पदार्थः—(आथर्वण) हे निश्चल ब्रह्म के जानने-वाले महर्षि ! (देवम्) प्रकाशस्वरूप (सवितारम्) सबके प्रेरक परमात्मा को (दोषो) रात्रि में भी (गाय) गा (बृहत्) विशाल रूप से (गाय) गा (द्युमत्) स्पष्ट रीति से (धेहि) धारण कर और (स्तुहि) बड़ाई कर ।

भावार्थः—विद्वान् पुरुष परमेश्वर के गुणों को हृदय में धारण करके संसार में सदा प्रकाशित करे ।

Adv. Vidit Chauhan Collection, Noida

Digitized by Agamnigam Foundation, Chandigarh

: ३१ :

विद्या-प्राप्ति

यथा वृक्षं लिबुजा समन्तं परिषस्वजे।
एवा परिष्वजस्व मां यथा मां कामिन्यसो
यथा मन्नापगा असः ॥ ६।८।१॥

पदार्थः—(यथा) जैसे (लिबुजा) बढ़ानेवाले आश्रय के साथ उत्पन्न होनेवाली बेल (वृक्षम्) वृक्ष को (समन्तम्) सब ओर से (परिषस्वजे) लिपट जाती है (एव) वैसे ही 'हे विद्या' (माम्) मुझसे (परिष्वजस्व) तू लिपट जा (यथा) जिससे तू (माम्, कामिनी) मेरी कामना करनेवाली (असः) होवे और (यथा) जिससे तू (मत्) मुझसे (अपगाः) बिछुड़नेवाली (न) न (असः) होवे।

भावार्थः—ब्रह्मचारी पूरा तपश्चरण करके विद्या को इस प्रकार प्राप्त करे जिससे वह सदा स्मरण करके उससे उपकार लेता रहे।

Adv. Vidit Chauhan Collection, Noida

Digitized by Agamnigam Foundation, Chandigarh

: ३२ :

ईर्ष्या-नाश

ईर्ष्याया ध्राजिं प्रथमां प्रथमस्या उतापराम् ।
अग्निं हृदय्यं शोकं तं ते निर्वापयामसि ।।
६ । १८ । १ ।।

पदार्थः—हे मनुष्य ! (ते) तेरी (ईर्ष्यायाः) डाह की (प्रथमस्याः) पहली (ध्राजिम्) गति को (उत) और (प्रथमस्याः) पहली गति की (अपराम्) दूसरी गति को (हृदय्यम्) हृदय में भरी (तम्) सतानेवाली (अग्निम्) अग्नि और (शोकम्) शोक को (निः) सर्वथा (वापयामसि) हम नष्ट करते हैं ।

भावार्थः—मनुष्य दूसरों की वृद्धि देखकर कभी डाह न करे, अपितु दूसरे की उन्नति में अपनी उन्नति जाने ।

Adv. Vidit Chauhan Collection, Noida

Digitized by Agamnigam Foundation, Chandigarh

: ३३ :

ओ पापी विघ्न ! मुझे छोड़ दे

अव मा पाप्मन्त्सृज वशी सन् मृडयासि नः ।
आ मा भद्रस्य लोके पाप्मन् धेह्यविह्रुतम् ॥
६ । २६ । १ ॥

पदार्थः—(पाप्मन्) हे पापी-विघ्न ! (मा) मुझे (अवसृज) छोड़ दे और (वशी) वश में पड़नेवाला (सन्) होकर तू (नः) हमें (मृडयासि) सुख दे। (पाप्मन्) हे पापी-विघ्न ! (भद्रस्य) आनन्द के (लोके) लोक में (मा) मुझे (अविह्रुतम्) पीड़ारहित (आ) अच्छे प्रकार (धेहि) रख।

भावार्थः—जो मनुष्य पुरुषार्थ से विघ्नों को हटाते हैं, वे आनन्द पाते हैं।

Adv. Vidit Chauhan Collection, Noida

Digitized by Agamnigam Foundation, Chandigarh

: ३४ :

सबका बल मुझे दे

सिंहे व्याघ्र उत या पृदाकौ
त्विषिरग्नौ ब्राह्मणे सूर्ये या।
इन्द्रं या देवी सुभगा जजान
सा न ऐतु वर्चसा संविदाना ॥ ६ । ३८ । १ ॥

पदार्थः—(या) जो (त्विषिः) ज्योति (सिंहे) सिंह में (व्याघ्रे) बाघ में (उत) और (पृदाकौ) फुंकारते हुए साँप में और (या) जो (अग्नौ) अग्नि में (ब्राह्मणे) वेदवेत्ता पुरुष में और (सूर्ये) सूर्य में है या जिस (देवी) दिव्य गुणवाली, (सुभगा) बड़े ऐश्वर्यवाली 'ज्योति' ने (इन्द्रम्) परम ऐश्वर्य को (जजान) उत्पन्न किया है (सा) वह (वर्चसा) अन्न से (संविदाना) मिलती हुई (नः) हमें (आ) आकर (ऐतु) मिले।

भावार्थः—मनुष्य संसार के सब बलवान् और तेजस्वी पदार्थों में संयम करके ऐश्वर्य और पराक्रम प्राप्त करे।

Adv. Vidit Chauhan Collection, Noida

Digitized by Agamnigam Foundation, Chandigarh

: ३५ :

मैं यशस्वी होऊँ

यशा इन्द्रो यशा अग्निर्यशाः सोमो अजायत।
यशा विश्वस्य भूतस्याहमस्मि यशस्तमः॥
६। ३९। ३॥

पदार्थः—(इन्द्रः) सूर्य (यशाः) यशवाला (अग्निः) अग्नि (यशाः) यशवाला और (सोमः) चन्द्रमा (यशाः) यशवाला (अजायत) हुआ है। (यशाः) यश चाहनेवाला (अहम्) मैं (विश्वस्य) सब (भूतस्य) संसार के बीच (यशस्तमः) अति यशस्वी (अस्मि) हूँ।

भावार्थः—मनुष्य संसार के सब पदार्थों से उपकार लेकर महायशस्वी होवे।

Adv. Vidit Chauhan Collection, Noida

Digitized by Agamnigam Foundation, Chandigarh

: ३६ :

निर्वैरता

अनमित्रं नो अधरादनमित्रं न उत्तरात् ।
इन्द्रानमित्रं नः पश्चादनमित्रं पुरस्कृधि ॥
६ । ४० । ३ ॥

पदार्थः—(इन्द्र) हे महाप्रतापी परमेश्वर ! (नः) हमारे लिए (अधरात्) नीचे से (अनमित्रम्) निर्वैरता (नः) हमारे लिए (उत्तरात्) ऊपर से (अनमित्रम्) निर्वैरता (नः) हमारे लिए (पश्चात्) पीछे से (अनमित्रम्) निर्वैरता और (पुरः) आगे से (अनमित्रम्) निर्वैरता (कृधि) तू कर ।

भावार्थः—मनुष्य सब स्थान और सब काल में शान्तिदायक कर्म करें ।

Adv. Vidit Chauhan Collection, Noida

Digitized by Agamnigam Foundation, Chandigarh

: ३७ :

घर और दुर्गों का बाह्य वातावरण

आयने ते परायणे दूर्वा रोहतु पुष्पिणी।
उत्सो वा तत्र जायतां ह्रदो वा पुण्डरीकवान् ॥
६ । १०६ । १ ॥

पदार्थः—[हे मनुष्य !] (ते) तेरे (आयने) आगमन-मार्ग और (परायणे) निकास में (पुष्पिणी) फूलवाली (दूर्वाः) दूब, घासें (रोहन्तु) उगें। (वा) और (तत्र) वहाँ (उत्सः) कुआँ (वा) और (पुण्डरीकवान्) कमलोंवाला (ह्रदः) ताल (जायताम्) होवे।

भावार्थः—मनुष्य दुर्ग और घरों के आस-पास के दृश्य को सुख बढ़ानेवाले दूब, जल, कमल आदि से स्वस्थता के लिए सुशोभित रक्खें।

Adv. Vidit Chauhan Collection, Noida

Digitized by Agamnigam Foundation, Chandigarh

: ३८ :

हम पाप से बचें

द्रुपदादिव मुमुचानः स्विन्नः स्नात्वा मलादिव।
पूतं पवित्रेणेवाज्यं विश्वे शुम्भन्तु मैनसः॥
६। ११५। ३॥

पदार्थः—(द्रुपदात्) कष्ट-बन्धन से (मुमुचानः इव) छुटे हुए पुरुष के समान (स्विन्नः) पसीने में डूबे हुए (स्नात्वा) स्नान करके (मलात्) मल से 'छूटे हुए के' (इव) समान (पवित्रेण) शुद्ध करनेवाले छन्ना वा अग्नि से (पूतम्) शुद्ध किये हुए (आज्यम् इव) घृत के समान (विश्वे) सब 'दिव्यगुण' (मा) मुझको (एनसः) पाप से (शुम्भन्तु) शुद्ध करें।

भावार्थः—मनुष्य प्रयत्नपूर्वक पापों से सर्वथा शुद्ध रहकर सदा आनन्द भोगें।

Adv. Vidit Chauhan Collection, Noida

Digitized by Agamnigam Foundation, Chandigarh

ब्रह्म-विद्या का उपदेश

धीती वा ये अनयन् वाचो अग्रं
मनसा वा येऽवदन्नृतानि।
तृतीयेन ब्रह्मणा वावृधाना-
स्तुरीयेणामन्वत नाम धेनोः॥ ७।१।१॥

पदार्थः—(ये) जिन लोगों ने 'एक' (धीती) अपनें कर्म से (वाचः) वेदवाणी द्वारा (अग्रम्) श्रेष्ठपन को (वा) निश्चय करके (अनयन्) पाया है (वा) और (ये) जिन्होंने 'दूसरे' (मनसा) विज्ञान से (ऋतानि) सत्य-वचन (अवदन्) बोले हैं और जो (तृतीयेन) तीसरे 'हमारे कर्म और विज्ञान से परे' (ब्रह्मणा) प्रवृद्ध ब्रह्म 'परमात्मा' के साथ (वावृधानाः) वृद्धि करते रहे हैं उन लोगों ने (तुरीयेण) चौथे 'कर्म-विज्ञान' और ब्रह्म से अथवा धर्म, अर्थ और काम से प्राप्त मोक्षपद के साथ (धेनोः) तृप्त करनेवाली शक्ति, परमात्मा के (नाम) नाम अर्थात् तत्त्व को (अमन्वत) जाना है।

भावार्थः—जो योगीजन वेद के तत्त्व को जान-कर कर्म करते और विज्ञानपूर्वक सत्य का उपदेश करके परमेश्वर की अपार महिमा को खोजते आगे बढ़ते जाते हैं, वे ही मोक्षपद पाकर परमात्मा की आज्ञा से विचरते हुए स्वतन्त्रता से आनन्द भोगते हैं।

Adv. Vidit Chauhan Collection, Noida

Digitized by Agamnigam Foundation, Chandigarh

: ४० :

आत्मिक उन्नति

भद्रादधि श्रेयः प्रेहि बृहस्पतिः पुरएता ते अस्तु। अथेममस्या वर आ पृथिव्या आरे शत्रुं कृणुहि सर्ववीरम् ॥ ७। ८। १ ॥

पदार्थः—[हे मनुष्य !](भद्रात्) एक मंगल कर्म से (श्रेयः) अधिक मंगलकारी कर्म को (अधि) अधिकारपूर्वक (प्र इह) अच्छे प्रकार प्राप्त हो (बृहस्पतिः) बड़े-बड़े लोकों का पालक परमेश्वर (ते) तेरा (पुर एता) अग्रगामी (अस्तु) होवे (अथ) फिर तू (इमम्) इस 'अपने आत्मा' को (अस्याः पृथिव्याः) इस पृथिवी के (वरे) श्रेष्ठ फल में (आरे शत्रुम्) शत्रुओं से दूर (सर्ववीरम्) सर्ववीर, सबमें वीर (आ) सब ओर से (कृणुहि) बना।

भावार्थः—जो मनुष्य परमेश्वर के आश्रय से अधिक-अधिक उन्नति करते हुए आगे बढ़ जाते हैं, वे ही सर्ववीर निर्विघ्नता से अपना जीवन सफल करते हैं।

Adv. Vidit Chauhan Collection, Noida

Digitized by Agamnigam Foundation, Chandigarh

: ४१ :

धन और बल

धाता दधातु नो रयिमीशानो जगतस्पतिः ।
स नः पूर्णेन यच्छतु ॥ ७ । १७ । १ ॥

पदार्थः—(ईशानः) ऐश्वर्यवान् (जगतः पतिः) जगत् का पालनेवाला (धाता) धाता, विधाता 'सृष्टिकर्त्ता' (नः) हमें (रयिम्) धन (दधातु) देवे (सः) वही (नः) हमको (पूर्णेन) पूर्ण बल से (यच्छतु) ऊँचा करे ।

भावार्थः—गृहस्थ लोग जगत्पिता परमात्मा के अनुग्रह से प्रयत्न करके धन और बल बढ़ाकर सुखी रहें ।

Adv. Vidit Chauhan Collection, Noida

Digitized by Agamnigam Foundation, Chandigarh

: ४२ :

शुभ कर्म करो

स्वाक्तं मे द्यावापृथिवी स्वाक्तं मित्रो अकरयम् ।
स्वाक्तं मे ब्रह्मणस्पतिः स्वाक्तं सविता करत् ।।
७ । ३० । १ ।।

पदार्थः—(द्यावापृथिवी) सूर्य और पृथिवी ने (मे) मेरा (स्वाक्तम्) स्वागत किया है । (अयम्) इस (मित्रः) मित्र 'मात-पिता आदि' ने (स्वाक्तम्) स्वागत (अकः) किया है । (ब्रह्मणः) वेद-विद्या का (पतिः) रक्षक 'आचार्य' (मे) मेरा (स्वाक्तम्) स्वागत और (सविता) प्रजाप्रेरक शूर पुरुष (स्वाक्तम्) स्वागत (करत्) करे ।

भावार्थः—मनुष्य सदा ऐसे शुभ कर्म करे जिससे संसार के सब पदार्थ और विद्वान् लोग उसके उपकारी होवें ।

Adv. Vidit Chauhan Collection, Noida

Digitized by Agamnigam Foundation, Chandigarh

: ४३ :

आदर्श मित्रता

अक्ष्यौ नौ मधुसंकाशे अनीकं नौ समञ्जनम् ।
अन्तः कृणुष्व मां हृदि मन इन्नौ सहासति ।।
७ । ३६ । १ ।।

पदार्थः—(नौ) हम दोनों की (अक्ष्यौ) दोनों आँखें (मधुसंकाशे) ज्ञान की प्रकाश करनेवाली और (नौ) हम दोनों का (अनीकम्) मुख (समञ्जनम्) यथावत् विकासवाला 'होवे' (माम्) मुझको (हृदि अन्तः) अपने हृदय के भीतर (कृणुष्व) कर ले, (नौ) हम दोनों का (मनः) मन (इत्) भी (सह) एकमेल (असति) होवे ।

भावार्थः—मनुष्य आपस में प्रीतियुक्त रहकर सदा धर्मयुक्त व्यवहार करके प्रसन्न रहें ।

Adv. Vidit Chauhan Collection, Noida

Digitized by Agamnigam Foundation, Chandigarh

: ४४ :

पराक्रम

कृतं मे दक्षिणे हस्ते जयो मे सव्य आहितः ।
गोजिद्भूयासमश्वजिद् धनंजयो हिरण्यजित् ॥
७ । ५० । ८ ॥

पदार्थः—(कृतम्) कर्म (मे) मेरे (दक्षिणे) दाहिने (हस्ते) हाथ में और (जयः) जीत (मे) मेरे (सव्ये) बायें हाथ में (आहितः) स्थिर है । मैं (गोजित्) भूमि जीतनेवाला (अश्वजित्) घोड़े जीतनेवाला (धनंजय) धन जीतनेवाला और (हिरण्यजित्) स्वर्ण जीतनेवाला (भूयासम्) रहूँ ।

भावार्थः—मनुष्य पराक्रमी होकर सब प्रकार की सम्पत्ति प्राप्त कर सुखी होवें ।

CC-0. Arya Vidya Chaudhari Collection, Noida

Digitized by Agamnigam Foundation, Chandigarh

: ४५ :

इन्द्रिय-निग्रह

शुम्भनी द्यावापृथिवी अन्तिसुम्ने महिव्रते।
आपः सप्त सुस्रुवुर्देवीस्ता नो मुञ्चन्त्वंहसः ॥
७ । ११२ । १ ॥

पदार्थः—(शुम्भनी) शोभायमान (द्यावापृथिवी) सूर्य और पृथिवी लोक (अन्तिसुम्ने) 'अपनी' गतियों से सुख देनेवाले और (महिव्रते) बड़े व्रत 'नियम' वाले हैं। (देवीः) उत्तम गुणवाली (सप्त) सात (आपः) व्यापनशील इन्द्रियाँ 'दो कान, दो नथने, दो आँखें और एक मुख' (सुस्रुवुः) 'हमें' प्राप्त हुई हैं (ताः) वे (नः) हमें (अंहसः) कष्ट से (मुञ्चन्तु) छुड़ावें।

भावार्थः—जैसे सूर्य और पृथिवीलोक ईश्वर-नियम से अपनी-अपनी गति पर चलकर वृष्टि, अन्न आदि से उपकार करते हैं, वैसे ही मनुष्य इन्द्रियों को नियम में रखकर अपराधों से बचें।

Adv. Vidit Chauhan Collection, Noida

Digitized by Agamnigam Foundation, Chandigarh

: ४६ :

आगे बढ़ो

उत् क्रामातः पुरुष माव पत्था
मृत्योः पड्वीशमवमुञ्चमानः।
मा च्छित्था अस्माल्लोकादग्नेः
सूर्यस्य संदृशः ॥ ८ । १ । ४ ॥

पदार्थः—(पुरुष) हे पुरुष ! (अतः) इस वर्त्तमान दशा से (उत् क्राम) आगे डग बढ़ा (मृत्योः) मृत्यु 'अज्ञान, निर्धनता आदि' की (पड्वीशम्) बेड़ी को (अवमुञ्चमानः) छोड़ता हुआ (मा अव पत्थाः) मत नीचे गिर (अस्मात् लोकात्) इस लोक 'वर्त्तमान अवस्था' से (अग्नेः) अग्नि शरीर और आत्मबल से और (सूर्यस्य) सूर्य के (संदृशः) दर्शन 'नियम' से (मा च्छित्थाः) मत अलग हो।

भावार्थः—मनुष्य अपनी वर्त्तमान दशा से आगे बढ़ने के लिए नित्य पुरुषार्थ करे।

Adv. Vidit Chauhan Collection, Noida

Digitized by Agamnigam Foundation, Chandigarh

: ४७ :

ऊपर उठो

उद्यानं ते पुरुष नावयानं
जीवातुं ते दक्षतातिं कृणोमि ।
आ हि रोहेममममृतं सुखं
रथमथ जिर्विर्विदथमावदासि ॥ ८ । १ । ६ ॥

पदार्थः—(पुरुष) हे पुरुष ! (ते) तेरा (उद्यानम्) 'चढ़ाव होवे' (न) न (अवयानम्) गिराव, (ते) तेरे लिए (जीवातुम्) जीविका और (दक्षतातिम्) बल 'योग्यता' (कृणोमि) मैं करता हूँ (हि) अवश्य (इमम्) इस (अमृतम्) अमर 'सनातन' (सुखम्) सुखदायक (रथम्) रथ पर (आ रोह) चढ़ जा 'उपदेश मान' (अथ) फिर (जिर्विः) स्तुति-योग्य होकर तू (विदथम्) विचार समाज में (आवदासि) भाषण कर ।

भावार्थः—जो मनुष्य ईश्वराज्ञा और गुरु-शिक्षा से विघ्नों को हटाकर आगे बढ़ते हैं वे संसार में स्तुति पाकर सभाओं के अधिष्ठाता होते हैं ।

Adv. Vidit Chauhan Collection, Noida

Digitized by Agamnigam Foundation, Chandigarh

: ४८ :

चावल और जौ का भोजन

शिवौ ते स्तां व्रीहियवावबलासावदोमधौ ।
एतौ यक्ष्मं वि बाधेते एतौ मुञ्चतो अंहसः ।।
८ । २ । १८ ।।

पदार्थः—[हे मनुष्य !] (ते) तेरे लिए (व्रीहियवौ) चावल और जौ (शिवौ) मंगल करनेवाले (अवलासौ) बल के न गिरानेवाले (अदोमधौ) भोजन में हर्ष करनेवाले (स्ताम्) हों (एतौ) ये दोनों (यक्ष्मम्) राजरोग को (वि) विशेष करके (बाधेते) हटाते हैं, (एतौ) ये दोनों (अंहसः) कष्ट से (मुञ्चतः) छुड़ाते हैं ।

भावार्थः—मनुष्यों को चावल और जौ आदि सात्त्विक अन्न का भोजन प्रसन्न होकर करना चाहिए, जो कि पुष्टिकारक हैं ।

Adv. Vidit Chauhan Collection, Noida

Digitized by Agamnigam Foundation, Chandigarh

: ४६ :

सत्यासत्य-विवेक

सुविज्ञानं चिकितुषे जनाय
सच्चासच्च वचसी पस्पृधाते ।
तयोर्यत् सत्यं यतरदृजीय-
स्तदित् सोमोऽवति हन्त्यासत् ॥ ८ । ४ । १२ ॥

पदार्थः—(चिकितुषे) ज्ञानी (जनाय) पुरुष के लिए (सुविज्ञानम्) सुगम विज्ञान है 'कि' (सत्) सत्य (च च) और (असत्) असत्य (वचसी) वचन (पस्पृधाते) दोनों परस्पर-विरोधी होते हैं। (तयोः) उन दोनों में से (यत्) जो (सत्यम्) सत्य और (यतरत्) जो कुछ (ऋजीयः) अधिक सीधा है (तत्) उसको (इत्) ही (सोमः) सर्वप्रेरक राजा (अवति) मानता है और (असत्) असत्य को (हन्ति) नष्ट करता है।

भावार्थः—विवेकी मर्मज्ञ राजा सत्य और असत्य का निर्णय करके सत्य को मानता और असत्य को छोड़ता है।

Adv. Vidit Chauhan Collection, Noida

Digitized by Agamnigam Foundation, Chandigarh

: ५० :

उसे कौन जानता है

कस्तं प्र वेद क उ तं चिकेत यो अस्या हृदः
कलशः सोमधानो अक्षितः ।
ब्रह्मा सुमेधाः सो अस्मिन् मदेत ॥ ६ । १ । ६ ॥

पदार्थः—(कः) कौन पुरुष (तम्) उस परमेश्वर को (प्र वेद) अच्छी प्रकार जानता है (कः उ) किसने ही (तम्) उसको (चिकेत) समझा है (यः) जो परमेश्वर (अस्याः) इस वेद-वाणी के (हृदः) हृदय का (कलशः) कलश (अक्षितः) अक्षय (सोमधानः) अमृत का पात्र है (सः) वह (सुमेधाः) सुबुद्धि (ब्रह्मा) ब्रह्मा 'ब्रह्मज्ञानी वेदवेत्ता' (अस्मिन्) इस परमेश्वर में (मदेत) आनन्द पावे ।

भावार्थः—चतुर ब्रह्मज्ञानी पुरुष परमेश्वर और उसकी वेद-वाणी का तत्त्व जानकर प्रसन्न होते हैं ।

Adv. Vidit Chauhan Collection, Noida

Digitized by Agamnigam Foundation, Chandigarh

: ५१ :

माता-पिता बल दें

यथा मक्षा इदं मधु न्यञ्जन्ति मधावधि।
एवा मे अश्विना वर्चस्तेजो बलमोजश्च ध्रियताम्॥
९।१।१७॥

पदार्थः—(यथा) जैसे (मक्षाः) संग्रह करनेवाले पुरुष 'अथवा भ्रमर आदि जन्तु' (इदम्) ऐश्वर्य देने-वाले (मधु) ज्ञान-'रस' को (मधौ) ज्ञान 'वा मधु' के ऊपर (अधि) ठीक-ठीक (न्यञ्जन्ति) मिलाते जाते हैं (एव) वैसे ही (अश्विना) हे चतुर माता-पिता! (मे) मेरे लिए (वर्चः) प्रकाश (तेजः) तीक्ष्णता (बलम्) बल (च) और (ओजः) पराक्रम (ध्रियताम्) धरा जावे।

भावार्थः—जिस प्रकार बुद्धिमान् पुरुष अनेक बुद्धिमानों से निरन्तर शिक्षा पाते हैं, अथवा जैसे भ्रमर आदि कीट पुष्प, फल आदि से रस लेकर मधु एकत्रित करते जाते हैं, वैसे ही माता-पिता अपने सन्तानों को उचित शिक्षा देकर बली और पराक्रमी बनावें।

Adv. Vidit Chauhan Collection, Noida

Digitized by Agamnigam Foundation, Chandigarh

: ५२ :

अतिथि को खिलाकर खाओ

एष वा अतिथिर्यच्छ्रोत्रियस्तस्मात् पूर्वो नाश्नीयात् ॥
९ । ६ (३) । ७ ॥

पदार्थः—(यत्) क्योंकि (एषः वै) यही (अतिथिः) अतिथि (श्रोत्रियः) श्रोत्रिय 'वेद जाननेवाला पुरुष है' (तस्मात्) उस 'अतिथि' से (पूर्वः) पहले 'गृहस्थ' (न) न (अश्नीयात्) जीमे ।

भावार्थः—गृहस्थ का धर्म है कि अतिथि को भोजन कराके आप भोजन करे ।

Adv. Vidit Chauhan Collection, Noida

Digitized by Agamnigam Foundation, Chandigarh

: ५३ :

कर्मानुसार शरीर

अपाङ् प्राङेति स्वधया गृभीतोऽमर्त्यो
मर्त्येना सयोनिः ।
ता शश्वन्ता विषूचीना वियन्तान्यन्य
चिक्युर्न नि चिक्युरन्यम् ॥ १।१०।१६॥

पदार्थः—(स्वधया) अपनी धारण-शक्ति से (गृभीतः) ग्रहण किया हुआ (अमर्त्यः) अमरण स्वभाव-वाला 'जीव' (मर्त्येन) मरण स्वभाववाले 'शरीर' के साथ (सयोनिः) एक-स्थानी होकर (अपाङ्) नीचे को जाता हुआ 'वा' (प्राङ्) ऊपर को जाता हुआ (एति) चलता है। (ता) वे दोनों (शश्वन्ता) नित्य चलनेवाले (विषूचीना) सब ओर चलनेवाले और (वियन्ता) दूर-दूर चलनेवाले हैं, 'उन दोनों में से' (अन्यम्, अन्यम्) एक-एक को (नि चिक्युः) 'विवेकियों ने' निश्चय करके जाना है और 'मूर्खों ने' (न) नहीं (नि चिक्युः) निश्चय किया है।

भावार्थः—जीवात्मा अपने कर्मानुसार शरीर पाता और अधोगति वा ऊर्ध्वगति को प्राप्त होता है। जीवात्मा और शरीर के भेद को विद्वान् जानते हैं और मूर्ख नहीं जानते।

Adv. Vidit Chauhan Collection, Noida

Digitized by Agamnigam Foundation, Chandigarh

सादा, शुद्ध-आहार

सूयवसाद् भगवती हि भूया
अधा वयं भगवन्तः स्याम ।
अद्धि तृणमघ्न्ये विश्वदानीं
पिब शुद्धमुदकमाचरन्ती ॥ ६ । १० । २० ॥

पदार्थः—[हे प्रजा, सब स्त्री-पुरुषो !] (सूयवसात्) सुन्दर अन्न आदि भोगनेवाली और (भगवती) बहुत ऐश्वर्यवाली (हि) ही (भूयाः) हो (अध) फिर (वयम्) हम लोग (भगवन्तः) बड़े ऐश्वर्यवाले (स्याम) होवें। (अघ्न्ये) हे हिंसा न करनेवाली प्रजा ! (विश्वदानीम्) समस्त दानों की क्रिया का (आचरन्ती) आचरण करती हुई तू 'हिंसा न करनेवाली गौ के समान' (तृणम्) घास 'अल्पमूल्य पदार्थ' को (अद्धि) खा और (शुद्धम्) शुद्ध (उदकम्) जल को (पिव) पी ।

भावार्थः—जैसे गौ अल्पमूल्य घास खाकर और शुद्ध जल पीकर दूध-घी आदि देकर उपकार करती है, वैसे ही मनुष्य थोड़े व्यय से शुद्ध आहार-विहार करके संसार का सदा उपकार करें ।

Adv. Vidit Chauhan Collection, Noida

Digitized by Agamnigam Foundation, Chandigarh

परमात्मा के अनेक नाम

इन्द्रं मित्रं वरुणमग्निमाहुरथो
दिव्यः स सुपर्णो गरुत्मान् ।
एकं सद् विप्रा बहुधा वदन्त्यग्नि
यमं मातरिश्वानमाहुः ॥ १ । १० । २८ ॥

पदार्थः—(अग्निम्) अग्नि 'सर्वव्यापक परमेश्वर' को (इन्द्रम्) इन्द्र 'बड़े ऐश्वर्यवाला' (मित्रम्) मित्र (वरुणम्) वरुण 'श्रेष्ठ' (आहुः) वे (तत्त्वज्ञानी) कहते हैं (अथो) और (सः) वह (दिव्यः) प्रकाशमय (सुपर्णः) सुन्दर पालन-सामर्थ्यवाला (गरुत्मान्) स्तुतिवाला 'गुरु आत्मा' महान् आत्मा है । (विप्राः) बुद्धिमान् लोग (एकम्) एक (सत्) सत्तावाले 'ब्रह्म' को (बहुधा) बहुत प्रकार से (वदन्ति) कहते हैं, (अग्निम्) उसी अग्नि 'सर्वव्यापक परमात्मा' को (यमम्) नियन्ता और (मातरिश्वानम्) आकाश में श्वास लेता हुआ 'अर्थात् आकाश में व्यापक' (आहुः) वे बताते हैं ।

भावार्थः—विद्वान् लोग परमात्मा के अनेक नामों से उसके गुण-कर्म-स्वभाव को जानकर और उसकी उपासना करके संसार में उन्नति करें ।

Adv. Vidit Chauhan Collection, Noida

Digitized by Agamnigam Foundation, Chandigarh

: ५६ :

मुझसे पाप दूर हो

**यथा वातश्च्यावयति भूम्या रेणुमन्तरिक्षाच्चाभ्रम् ।
एवा मत् सर्वं दुर्भूतं ब्रह्मनुत्तमपायति ॥१०।१।१३॥**

पदार्थः—(यथा) जैसे (वातः) वायु (भूम्या) भूमि से (रेणुम्) रेणु 'धूलि' को (च) और (अन्तरिक्षात्) आकाश से (अभ्रम्) मेघ को (च्यावयति) सरका देता है (एव) वैसे ही (मत्) मुझसे (सर्वम्) सब (ब्रह्मनुत्तम्) ब्राह्मणों द्वारा हटाया गया (दुर्भूतम्) पाप (अप अयति) दूर चला जावे ।

भावार्थः—मनुष्य सदुपदेश पाकर पाप-कर्म छोड़ने में शीघ्रता करे ।

Adv. Vidit Chauhan Collection, Noida

Digitized by Agamnigam Foundation, Chandigarh

: ५७ :

ज्येष्ठ ब्रह्म को नमस्कार

यस्य भूमिः प्रमान्तरिक्षमुतोदरम् ।
दिवं यश्चक्रे मूर्धानं तस्मै ज्येष्ठाय ब्रह्मणे नमः ॥
१० । ७ । ३२ ॥

पदार्थः—(भूमिः) भूमि (यस्य) जिस 'परमेश्वर' के (प्रमा) पादमूल 'के समान' (उत्) और (अन्तरिक्षम्) अन्तरिक्ष 'पृथिवी और सूर्य के बीच का आकाश' (उदरम्) उदर 'समान' है (दिवम्) सूर्य को (यः) जिसने (मूर्धानम्) मस्तिष्क 'समान' (चक्रे) रचा (तस्मै) उस (ज्येष्ठाय) ज्येष्ठ 'सबसे बड़े वा सबसे श्रेष्ठ' (ब्रह्मणे) ब्रह्म 'परमात्मा' को (नमः) नमस्कार है ।

भावार्थः— जोपरमात्मा जगत् के सब लोकों में निरन्तर व्यापक है हम उसको सदा मस्तक झुकाते हैं ।

Adv. Vidit Chauhan Collection, Noida

Digitized by Agamnigam Foundation, Chandigarh

: ५८ :

जीव का स्वरूप

त्वं स्त्री त्वं पुमानसि
त्वं कुमार उत वा कुमारी।
त्वं जीर्णो दण्डेन वञ्चसि
त्वं जातो भवसि विश्वतोमुखः ॥
१०।८।२७॥

पदार्थः—[हे जीवात्मा !] (त्वम्) तू (स्त्री) स्त्री, (त्वम्) तू (पुमान्) पुरुष, (त्वम्) तू (कुमारः) कुमार 'लड़का' (उत वा) अथवा (कुमारी) कुमारी 'लड़की' (असि) है। (त्वम्) तू (जीर्णः) स्तुति किया गया 'होकर' (दण्डेन) दण्ड 'दमन-सामर्थ्यं' से (वञ्चसि) चलता है, (त्वम्) तू (विश्वतो मुखः) सब ओर मुख-वाला 'बड़ा चतुर होकर' (जातः) प्रसिद्ध (भवसि) होता है।

भावार्थः—जैसे परमात्मा में कोई लिंग-विशेष नहीं है, वैसे ही जीवात्मा में विशेष चिह्न नहीं है। वह शरीर के सम्बन्ध से स्त्री-पुरुष, लड़का-लड़की आदि होता है और शत्रुओं का दमन करके सब ओर दृष्टि करता हुआ धर्मात्मा होकर स्तुति और कीर्ति पाता है।

Adv. Vidit Chauhan Collection, Noida

Digitized by Agamnigam Foundation, Chandigarh

: ५६ :

ईश्वर के ज्ञान से निर्भयता

अकामो धीरो अमृतः स्वयम्भू
रसेन तृप्तो न कुतश्चनोनः।
तमेव विद्वान् न बिभाय मृत्यो-
रात्मानं धीरमजरं युवानम् ॥ १० । ८ । ४४ ॥

पदार्थः—(अकामः) निष्काम (धीरः) धीर 'धैर्यवान्' (अमृतः) अमर (स्वयम्भू) अपने-आप वर्त्तमान वा उत्पन्न (रसेन) रस 'वीर्य वा पराक्रम' से (तृप्तः) तृप्त अर्थात् परिपूर्ण 'परमात्मा' (कुतः चन) कहीं से भी (ऊनः) न्यून (न) नहीं है (तम् एव) उस ही (धीरम्) धीर 'बुद्धिमान्' (अजरम्) अजर 'अक्षय' (युवानम्) युवा 'महाबली' (आत्मानम्) आत्मा 'परमात्मा' को (विद्वान्) जानता हुआ पुरुष (मृत्योः) मृत्यु 'मरण वा दुःख' से (न) नहीं (बिभाय) डरता है।

भावार्थः—जो मनुष्य निष्काम, बुद्धिमान्, धैर्यवान् आदि गुण-विशिष्ट परमात्मा को जान लेते हैं, वे परोपकारी धीर-वीर पुरुष मृत्यु वा विपत्ति से निर्भय होकर आनन्द भोगते हैं।

Adv. Vidit Chauhan Collection, Noida

Digitized by Agamnigam Foundation, Chandigarh

: ६० :

प्रभो ! पाप से बचा

मा नो हिंसीरधि नो ब्रूहि परि णो वृङ्ग्धि मा क्रुधः ।
मा त्वाया समराम्महि ।। ११ । २ । २० ।।

पदार्थः—'हे रुद्र परमेश्वर' (नः) हमें (मा हिंसीः) मत कष्ट दे, (नः) हमें (अधि) ईश्वर होकर (ब्रूहि) उपदेश कर (नः) हमें 'पाप से' (परिवृङ्ग्धि) सर्वथा अलग रख, (मा क्रुधः) क्रोध मत कर। (त्वया) तेरे साथ (मा सम् अरामहि) हम समर 'युद्ध' न करें।

भावार्थः—जो मनुष्य परमेश्वर की आज्ञा में चलते हैं, वे पुरुषार्थी पुरुष अपराध से बचकर सदा सुखी रहते हैं।

Adv. Vidit Chauhan Collection, Noida

Digitized by Agamnigam Foundation, Chandigarh

: ६१ :

प्रभु को हृदय में धारण करो

प्राण मा मत् पर्यावृतो न मदन्यो भविष्यसि ।
अपां गर्भमिव जीवसे प्राण बध्नामि त्वा मयि ।।
११ । ४ । २६ ।।

पदार्थः—(प्राण) हे प्राण ! 'जीवदाता परमेश्वर' (मत्) मुझसे (पर्यावृतः) पृथक् वर्त्तमान (मा) मत 'हो' तू (मत्) मुझसे (अन्यः) अन्य (न भविष्यसि) न होगा । (प्राण) हे प्राण ! 'जीवन-दाता परमेश्वर' (अपाम्) प्राणियों 'वा जल' के (गर्भम् इव) गर्भ के समान (त्वा) तुझको (जीवसे) 'अपने' जीवन के लिए (मयि) अपने में (बध्नामि) बाँधता हूँ ।

भावार्थः—जैसे गर्भ प्राणियों में और अग्नि जल के भीतर चेष्टा करता है, वैसे ही मनुष्य परमात्मा को हृदय में धारण करके उन्नति करे ।

Adv. Vidit Chauhan Collection, Noida

Digitized by Agamnigam Foundation, Chandigarh

: ६२ :

ब्रह्मचर्य-महिमा

ब्रह्मचर्येण तपसा देवा मृत्युमपाघ्नत ।
इन्द्रो ह ब्रह्मचर्येण देवेभ्यः स्वराभरत् ।।
११ । ५ । १९ ।।

पदार्थः—(ब्रह्मचर्येण) ब्रह्मचर्य 'वेदाध्ययन और इन्द्रियदमन' (तपसा) तप से (देवाः) विद्वानों ने (मृत्युम्) मृत्यु 'मृत्यु के कारण निरुत्साह, दरिद्रता आदि' को (अप) हटाकर (अघ्नत) नष्ट किया है। (ब्रह्मचर्येण) ब्रह्मचर्य-नियम-पालन से (ह) ही (इन्द्रः) सूर्य ने (देवेभ्यः) उत्तम पदार्थों के लिए (स्वः) सुख अर्थात् प्रकाश को (आ भरत्) धारण किया है।

भावार्थः—विद्वान् लोग वेदों को पढ़ने और इन्द्रियों को वश में करने से आलस्य वा निर्धनता दूर करके मोक्ष-सुख प्राप्त करते हैं, जैसे सूर्य ईश्वर-नियम पूरा करके अपने प्रकाश से संसार में उत्तम पदार्थ प्रकट करता है।

Adv. Vidit Chauhan Collection, Noida

Digitized by Agamnigam Foundation, Chandigarh

: ६३ :

शत्रुओं पर आक्रमण

उत्तिष्ठत संनह्यध्वमुदाराः केतुभिः सह ।
सर्पा इतरजना रक्षांस्यमित्राननु धावत ॥
११ । १० । १ ॥

पदार्थः—(उदाराः) हे उदार पुरुषो ! 'बड़े अनुभवी लोगो !' (उत् तिष्ठत) उठो और (केतुभिः सह) झण्डों के साथ (संनह्यध्वम्) कवचों को पहनो 'जो' (सर्पाः) सर्प 'सर्पों के समान हिंसक' (इतरजनाः) पामर जन (रक्षांसि) राक्षस हैं (अमित्रान् अनु) 'उन' शत्रुओं पर (धावत) धावा करो ।

भावार्थः—महानुभवी शूरवीर पुरुष कवच आदि पहनकर और ध्वजा-पताका, अस्त्र-शस्त्र लेकर शत्रुओं पर चढ़ें ।

Adv. Vidit Chauhan Collection, Noida

Digitized by Agamnigam Foundation, Chandigarh

: ६४ :

पृथिवी-धारक गुण

सत्यं बृहदृतमुग्रं दीक्षा तपो
ब्रह्म यज्ञः पृथिवीं धारयन्ति ।
सा नो भूतस्य भव्यस्य पत्न्युरुं
लोकं पृथिवी नः कृणोतु ॥ १२ । १ । १ ॥

पदार्थः—(बृहत्) बढ़ा हुआ (सत्यम्) सत्कर्म (उग्रम्) उग्र (ऋतम्) सत्य ज्ञान (दीक्षा) दीक्षा 'आत्म-निग्रह' (ब्रह्म) ब्रह्मचर्य 'वेदाध्ययन, वीर्यनिग्रह रूप' (तपः) 'व्रत धारण' और (यज्ञः) यज्ञ 'देवपूजा, सत्संग और दान' (पृथिवीम्) पृथिवी को (धारयन्ति) धारण करते हैं (नः) हमारे (भूतस्य) बीते हुए और (भव्यस्य) होनेवाले 'पदार्थं' की (पत्नी) पालन करने-वाली (सा पृथिवी) वह पृथिवी (उरुम्) चौड़ा (लोकम्) स्थान (नः) हमारे [लिए] (कृणोतु) करे ।

भावार्थः—सत्कर्मी, सत्य-ज्ञानी, जितेन्द्रिय, ईश्वर और विद्वानों से प्रीति करनेवाले चतुर पुरुष पृथिवी पर उन्नति करते हैं । यह नियम भूत और भविष्यत् के लिए समान है ।

Adv. Vidit Chauhan Collection, Noida

Digitized by Agamnigam Foundation, Chandigarh

: ६५ :

वेदानुसार जीवन से पूर्ण आयु

वैश्वदेवीं वर्चस आ रभध्वं
शुद्धा भवन्तः शुचयः पावकाः ।
अतिक्रामन्तो दुरिता पदानि
शतं हिमाः सर्ववीरा मदेम ॥ १२ । २ । २८ ॥

पदार्थः—'हे मनुष्यो ! (वैश्वदेवीम्) सब विद्वानों के हित करनेवाली 'वेदवाणी' को (वर्चसे) तेज पाने के लिए तुम (शुद्धाः) शुद्ध, (शुचयः) पवित्र (पावकः) शुद्ध करनेवाले (भवन्तः) होते हुए (आरभध्वम्) आरम्भ करो । (दुरिता) कठिन 'कष्टदायक' (पदानि) पगडण्डियों को (अतिक्रमन्तः) लाँघते हुए (सर्ववीराः) सबको वीर रखते हुए हम (शतम्) सौ (हिमाः) शीत ऋतुओं वाली 'स्थितियों' तक (मदेम) सुख भोगें ।

भावार्थः—मनुष्यों को योग्य है कि वेदवाणी के निरन्तर विचार से बाहिर और भीतर से शुद्ध होकर और दूसरों को शुद्ध करके, कुमार्गों को त्यागकर, सबको वीर बनाते हुए पूर्ण आयु भोगें ।

Adv. Vidit Chauhan Collection, Noida

Digitized by Agamnigam Foundation, Chandigarh

: ६६ :

वेद-ज्ञानी का जीवन सफल

यो अस्या ऊधो न वेदाथो अस्या स्तनानुत ।
उभयेनैवास्मै दुहे दातुं चेदशकद् वशाम् ।।
१२ । ४ । १८ ।।

पदार्थः—(यः) जो 'विद्वान्' (अस्याः) इस 'वेद-वाणी' के (ऊधः) सींचने को (अथो उत्) और भी (अस्याः) इसके (स्तनान्) गर्जन शब्दों 'बड़े उपदेशों को' (न) अब 'विद्या प्राप्त करके' (वेद) जानता है, वह 'वेदवाणी' (उभयेन) दोनों 'इहलोक और परलोक के सुख' से (एव) ही (अस्मै) इस 'ब्रह्मज्ञानी' को (दुहे) भर देती है, (च, इत्=चेत्) जो (वशाम्) वशा 'कामना-योग्य वेदवाणी' (दातुम् अशकत्) दे सका है ।

भावार्थः—जो मनुष्य वेदों के पवित्र लाभों और उपदेशों को समझ लेता है और संसार में प्रकाश करता है, वह इस जन्म और दूसरे जन्म का आनन्द पाता है ।

Adv. Vidit Chauhan Collection, Noida

Digitized by Agamnigam Foundation, Chandigarh

: ६७ :

वैरियों का नाश

उद्यंस्त्वं देव सूर्य सपत्नानव मे जहि ।
अवैनानश्मना जहि ते यन्त्वधमं तमः ।।
१३ । १ । ३२ ।।

पदार्थः—(देव) हे विजय चाहनेवाले ! (सूर्य, हे सर्वप्रेरक राजन् ! (उद्यन् त्वम्) ऊँचा चढ़ता हुआ तू (मे) मेरे (सपत्नान्) वैरियों को (अव जहि) मार गिरा। (एनान्) इन 'शत्रुओं' को (अश्मना) पत्थर 'आदि गिराने' से (अव जहि) मार गिरा, (ते) वे लोग (अधमम्) बड़े नीचे (तमः) अधन्कार में (यन्तु) जावें ।

भावार्थः—राजा को योग्य है कि न्याय-व्यवहार में प्रकाशमान होकर शत्रुओं को यथापराध दण्ड देकर कारागार में पीड़ा देवे ।

Adv. Vidit Chauhan Collection, Noida

Digitized by Agamnigam Foundation, Chandigarh

: ६८ :

वेद के अपमानकर्त्ता को दण्ड

यश्च गां पदा स्फुरति प्रत्यङ् सूर्यं च मेहति ।
तस्य वृश्चामि ते मूलं न च्छायां करवोऽपरम् ॥
१३ । १ । ५३ ॥

पदार्थः—(यः) जो कोई (प्रत्यङ्) प्रतिकूलगामी पुरुष (गाम्) वेदवाणी को (पदा) पग से तिरस्कार के साथ (स्फुरति) ठोकर मारता है (च च) और (सूर्यम्) सूर्य 'समान प्रतापी विद्वान् मनुष्य' को (मेहति=मेधति) सताता है, (तस्य ते) उस तेरी (मूलम्) जड़ को (वृश्चामि) मैं काटता हूँ, तू (छायाम्) छाया 'अन्धकार वा अविद्या' को (अपरम्) फिर (न) न (करवः) फैलावे ।

भावार्थः—जो मनुष्य सत्य वेदवाणी का तिरस्कार करके विद्वानों को कष्ट देवे, उसको लोग दण्ड देकर नाश करें ।

Adv. Vidit Chauhan Collection, Noida

Digitized by Agamnigam Foundation, Chandigarh

: ६९ :

सुपथ से विचलित न हों

मा प्र गाम पथो वयं मा यज्ञादिन्द्र सोमिनः।
मान्त स्थुर्नो अरातयः ॥ १३ । १ । ५९ ॥

पदार्थः—(इन्द्र) हे बड़े ऐश्वर्यवाले जगदीश्वर ! (पथः) वैदिक मार्ग से (वयम्) हम (मा प्र गाम) कभी दूर न जावें और (मा) न (सोमिनः) ऐश्वर्ययुक्त (यज्ञात्) यज्ञ 'देवपूजा, संगतिकरण और दान-व्यवहार' से 'दूर जावें'। (अरातयः) अदानी लोग (नः अन्तः) हमारे बीच (मा स्थुः) न ठहरें।

भावार्थः—विद्वान् लोग परमात्मा की उपासना करते हुए सदा वैदिक मार्ग पर चलकर श्रेष्ठ कर्म करें और सुपात्रों को योग्य दान देते रहें।

Adv. Vidit Chauhan Collection, Noida

Digitized by Agamnigam Foundation, Chandigarh

: ७०

पुत्र-पौत्रों के साथ निवास

इहैव स्तं मा वि यौष्टं विश्वमायुर्व्यश्नुतम् ।
क्रीडन्तौ पुत्रैर्नप्तृभिर्मोदमानौ स्वस्तकौ ॥
१४ । १ । २२ ॥

पदार्थः—'हे वधू-वर !' (इह एव) यहाँ गृहस्थाश्रम के नियम में ही (स्तम्) तुम दोनों रहो, (मा वि यौष्टम्) कभी अलग मत होओ और (पुत्रैः) पुत्रों के साथ तथा (नप्तृभिः) नातियों के साथ (क्रीडन्तौ) क्रीड़ा करते हुए (मोदमानौ) हर्ष मनाते हुए और (स्वस्तकौ) उत्तम घरवाले तुम दोनों (विश्वम् आयुः) सम्पूर्ण आयु को (वि अश्नुतम्) प्राप्त होओ ।

भावार्थः—स्त्री-पुरुष दोनों दृढ़ प्रतिज्ञा करके प्रसन्नतापूर्वक पुत्र-पौत्र आदि के साथ धर्म से रहकर पूर्ण आयु भोगकर यशस्वी होवें ।

Adv. Vidit Chauhan Collection, Noida

Digitized by Agamnigam Foundation, Chandigarh

: ७१ :

सम्राज्ञी

सम्राज्ञ्येधि श्वशुरेषु सम्राज्ञ्युत देवृषु ।
ननान्दुः सम्राज्ञ्येधि सम्राज्ञ्युत श्वश्र्वाः ।।
१४ । १ । ४४ ।।

पदार्थः—'हे वधू !' (श्वशुरेषु) अपने ससुर आदि 'मेरे पिता आदि गुरुजनों' के बीच (सम्राज्ञी) राजराजेश्वरी, (उत) और (देवृषु) अपने देवरों 'मेरे बड़े और छोटे भाइयों के बीच' (सम्राज्ञी) राजराजेश्वरी (एधि) हो, (ननान्दुः) अपनी ननद 'मेरी बहन' की (सम्राज्ञी) राजराजेश्वरी (उत) और (श्वश्र्वाः) अपनी सासु 'मेरी माता' की (सम्राज्ञी) राजराजेश्वरी (एधि) हो ।

भावार्थः—वधू विद्या और बुद्धि के बल से अपने कर्त्तव्यों में ऐसी चतुर हो कि ससुर, सासु, देवर, ननद आदि सब बड़े-छोटे जन उसकी बड़ी प्रतिष्ठा करें ।

Adv. Vidit Chauhan Collection, Noida

Digitized by Agamnigam Foundation, Chandigarh

: ७२ :

कल्याणी बन

अघोरचक्षुरपतिघ्नी स्योना शग्मा
सुशेवा सुयमा गृहेभ्यः ।
वीरसूर्देवृकामा सं त्वयैधिषीमहि
सुमनस्यमाना ॥ १४ । २ । १७ ॥

पदार्थः—'हे वधू !' तू (गृहेभ्यः) घरवालों के लिए (अघोर-चक्षुः) प्रिय दृष्टिवाली (अपतिघ्नी) पति को न सतानेवाली (स्योना) सुखदायिनी (शग्मा) कार्यकुशला (सुशेवा) सुन्दर सेवा-योग्य (सुयमा) अच्छे नियमोंवाली, (वीरसूः) वीरों को उत्पन्न करनेवाली और (सुमनस्यमाना) प्रसन्न चित्तवाली 'रह' (त्वया) तेरे साथ (सम् एधिषीमहि) हम मिलकर बढ़ते रहें ।

भावार्थः—गृहपत्नी कर्मकुशल होकर शुद्ध अन्तः-करण से सदा सबका हित करे, जिससे सब घर वृद्धि करता जावे ।

Adv. Vidit Chauhan Collection, Noida

Digitized by Agamnigam Foundation, Chandigarh

: ७३ :

भद्र श्रवण

सुश्रुतौ कर्णौ भद्रश्रुतौ कर्णौ भद्रं श्लोकं श्रूयासम् ॥
१६ । २ । ४ ॥

पदार्थः—मेरे (कर्णौ) दोनों कान (सुश्रुतौ) शीघ्र सुननेवाले (कर्णौ) दोनों कान (भद्रश्रुतौ) मंगल सुननेवाले होवें। (भद्रम्) मंगलमय (श्लोकम्) यश (श्रूयासम्) मैं सुना करूँ।

भावार्थः—मनुष्य प्रयत्न करके अभ्यास करें कि वे कान आदि इन्द्रियों को सचेत रखकर श्रेष्ठ कर्मों के करने में शीघ्रता करते रहें।

Adv. Vidit Chauhan Collection, Noida

Digitized by Agamnigam Foundation, Chandigarh

: ७४ :

मैं शिरोमणि बनूँ

मूर्धाहं रयीणां मूर्धा समानानां भूयासम् ।।
१६ । ३ । १ ।।

पदार्थः—(अहम्) मैं (रयीणाम्) धनों का (मूर्धा) सिर और (समानानाम्) समान 'तुल्य गुणी' पुरुषों का (मूर्धा) सिर (भूयासम्) हो जाऊँ ।

भावार्थः—मनुष्य उद्योग करें कि विद्या, और सुवर्ण आदि धन से गुणी मनुष्यों को पाकर संसार में शरीर में मस्तिष्क के समान मुखिया होवें ।

Adv. Vidit Chauhan Collection, Noida

Digitized by Agamnigam Foundation, Chandigarh

: ७५ :

मुझे श्रेष्ठ पद प्राप्त हो

वस्योभूयाय वसुमान् यज्ञो वसु वंशिषीय
वसुमान् भूयासं वसु मयि धेहि ॥ १६।६।४॥

पदार्थः—(वस्योभूयाय) अधिक श्रेष्ठ पद पाने के लिए 'हमारा' (यज्ञ) यज्ञ 'देवपूजा, संगतिकरण और दान-व्यवहार' (वसुमान्) श्रेष्ठ गुणवाला 'हो', (वसु) श्रेष्ठ पदवाला (भूयासम्) मैं हो जाऊँ 'हे परमात्मन् !' (वसु) श्रेष्ठ पद (मयि) मुझमें (धेहि) धारण कर।

भावार्थः—मनुष्य परमात्मा में विश्वास करके यह प्रयत्न करे कि वह परोपकार द्वारा संसार के भीतर श्रेष्ठ से श्रेष्ठ पद पावे।

Adv. Vidit Chauhan Collection, Noida

Digitized by Agamnigam Foundation, Chandigarh

: ७६ :

मैं भी प्रकाशमान बनूँ

शुक्रोऽसि भ्राजोऽसि ।
स यथा त्वं भ्राजता भ्राजोऽस्येवाहं
भ्राजता भ्राज्यासम् ॥ १७ । १ । २० ॥

पदार्थः—'हे परमेश्वर ! तू' (शुक्रः) शुद्ध स्वच्छ 'निर्मल' (असि) है । तू (भ्राजः) प्रकाशमान (असि) है । (स त्वम्) सो तू (यथा) जैसे (भ्राजता) प्रकाशमान स्वरूप के साथ (भ्राजः) प्रकाशमान (असि) है, (एव) वैसे ही (अहम्) मैं (भ्राजता) प्रकाशमान स्वरूप के साथ (भ्राज्यासम्) प्रकाशमान रहूँ ।

भावार्थः—जगदीश्वर के प्रकाशस्वरूप का ध्यान करके मनुष्य विद्या आदि उत्तम गुणों से संसार में तेजस्वी होवें ।

Adv. Vidit Chauhan Collection, Noida

Digitized by Agamnigam Foundation, Chandigarh

: ७७ :

सुकर्मी होकर आनन्द भोग

प्रजापतेरावृतो ब्रह्मणा वर्मणाहं
कश्यपस्य ज्योतिषा वर्चसा च ।
जरदष्टिः कृतवीर्यो विहायाः
सहस्रायुः सुकृतश्चरेयम् ॥ १७ । १ । २७ ॥

पदार्थः—(प्रजापतेः) प्रजापति 'प्राणियों के रक्षक' और (कश्यपस्य) कश्यप 'सर्वदर्शक परमेश्वर' के (ब्रह्मणा) वेदज्ञान से (वर्मणा) आश्रय 'वा रक्षा' से (ज्योतिषा) ज्योति से (च) और (वर्चसा) प्रताप से (आवृतः) घेरा हुआ (अहम्) मैं (जरदष्टिः) बड़ाई के साथ प्रवृत्ति 'वा भोजनवाला' (कृतवीर्यः) पूरे पराक्रमवाला, (विहायाः) विविध उपायोंवाला (सहस्रायुः) सहस्रों प्रकार से अन्नवाला और (सुकृतः) पुण्य कर्मवाला 'होकर' (चरेयम्) चलता रहूँ ।

भावार्थः—मनुष्यों को योग्य है कि सर्वपालक, सर्वदर्शक जगदीश्वर का अनेक प्रकार आश्रय लेकर और विविध प्रकार उपाय करके सुकर्मी होकर सदा आनन्द भोगें ।

Adv. Vidit Chauhan Collection, Noida

Digitized by Agamnigam Foundation, Chandigarh

: ७८ :

हम धर्माचरण से यशस्वी बनें

ऋतेन गुप्त ऋतुभिश्च सर्वैर्भूतेन
गुप्तो भव्येन चाहम् ।
मा मा प्रापत् पाप्मा मोत मृत्यु-
रन्तर्दधेऽहं सलिलेन वाचः ॥ १७ । १ । २९ ॥

पदार्थः—(अहम्) मैं (ऋतेन) सत्य-कर्म से (च) और (सर्वैः ऋतुभिः) सब ऋतुओं से (गुप्तः) रक्षा किया हुआ और (भूतेन) बीते हुए से (च) और (भव्येन) होनेवाले से (गुप्तः) रक्षा किया हुआ हूँ । (मा) मुझे (पाप्मा) पाप, बुराई (मा प्र आपत्) न पावे (उत) और (मा) न (मृत्युः) मृत्यु पावे, (अहम्) मैं (वाचः) वेदवाणी के (सलिलेन) जल के साथ (अन्तः दधे) अन्तर्धान होता हूँ 'डुबकी लगाता हूँ ।'

भावार्थः—मनुष्य धर्म का सहारा लेकर, सब भूत, भविष्यत् और वर्त्तमान को विचारकर, सब काल में सुरक्षित रहकर, निष्पाप और अमर अर्थात् यशस्वी होवें, यही वेदवाणी-रूप जल में स्नातक होना है ।

Adv. Vidit Chauhan Collection, Noida

Digitized by Agamnigam Foundation, Chandigarh

वेद मानव-हितकारी

सो चिन्नु भद्रा क्षुमती यशस्वत्युषा
उवास मनवे स्वर्वती ।
यदीमुशन्तमुशतामनु क्रतुमग्निं
होतारं विदथाय जीजनन् ॥ १८ । १ । २० ॥

पदार्थः—(सो) वही (चित्) निश्चय करके (नु) अब (भद्रा) कल्याणी (क्षुमती) अन्नवाली (यशस्वती) यशवाली (स्वर्वती) बड़े सुखवाली 'वेदवाणी' (उषा) उषा 'प्रभात वेला के समान' (मनवे) मनुष्य के लिए (उवास) प्रकाशमान हुई है । (यत्) क्योंकि (ईम) इस 'वेदवाणी' को (उशन्तम्) चाहनेवाले (होतारम्) दानी (अग्निम्) विद्वान् पुरुष को (उशतम्) अभिलाषी पुरुषों की (क्रतुम् अनु) बुद्धि के साथ (विदथाय) ज्ञान-समाज के लिए (जीजनन्) उन्होंने 'विद्वानों ने' उत्पन्न किया है ।

भावार्थः—परमात्मा ने मनुष्य के कल्याण के लिए वेदवाणी को सूर्य के प्रकाश के समान संसार में प्रकट किया है । जो मनुष्य वेद-ज्ञाता महाविद्वान् होवे, विद्वान् लोग उसको मुखिया बनाकर समाज का सुख बढ़ावें ।

Adv. Vidit Chauhan Collection, Noida

Digitized by Agamnigam Foundation, Chandigarh

: ८० :

वेद-विद्या से मोक्ष

सरस्वतीं देवयन्तो हवन्ते सरस्वतीमध्वरे तायमाने ।
सरस्वतीं सुकृतो हवन्ते सरस्वती दाशुषे वीर्यं दात् ।।
१८ । १ । ४१ ।।

पदार्थः—(सरस्वतीम्) सरस्वती 'विज्ञानवती वेद-विद्या' को (सरस्वतीम्) उसी सरस्वती को (देवयन्तः) दिव्य गुणों को चाहनेवाले पुरुष (तायमाने) विस्तृत होते हुए (अध्वरे) हिंसारहित व्यवहार में (हवन्ते) बुलाते हैं । (सरस्वतीम्) सरस्वती को (सुकृतः) सुकृती लोग (हवन्ते) बुलाते हैं, (सरस्वती) सरस्वती (दाशुषे) अपने भक्त को (वार्यम्) श्रेष्ठ पदार्थ (दात्) देती हैं ।

भावार्थः—विज्ञानी लोग परिश्रम के साथ आदरपूर्वक वेद-विद्या का अभ्यास करके पुण्य कर्म करते और मोक्ष आदि इष्ट पदार्थ पाते हैं ।

Adv. Vidit Chauhan Collection, Noida

Digitized by Agamnigam Foundation, Chandigarh

: ८१ :

वेद-मार्ग पर चलो

यमो नो गातुं प्रथमो विवेद
नैषा गव्यूतिरपभर्तवा उ।
यत्रा नः पूर्वे पितरः परेता एना
जज्ञानाः पथ्या अनु स्वाः ॥ १८ । १ । ५० ॥

पदार्थः—(प्रथमः) सबसे पहले वर्त्तमान (यमः) यम 'न्यायकारी परमात्मा' ने (नः) हमारे लिए (गातुम्) मार्ग (विवेद) जाना; (एषा) यह (गव्यूतिः) मार्ग (उ) कभी (अपभर्तवै) हटा धरने योग्य (न) नहीं है। (यत्र) जिस 'मार्ग' में (नः) हमारे (पूर्वे) पहले (पितरः) पितर 'पालन करनेवाले बड़े लोग' (परेताः) पराक्रम से चलते हैं (एना) उसी से (जज्ञानाः) उत्पन्न हुए 'प्राणी' (स्वाः) अपनी-अपनी (पथ्याः अनु) सड़कों पर चलें।

भावार्थः— परमात्मा ने 'पहले'-से-पहले सबके लिए वेद-मार्ग खोल दिया है। जिस प्रकार हमारे पूर्वजों ने उस मार्ग पर चलकर सुख पाया है, उसी वेद-मार्ग पर चलकर सब मनुष्य उन्नति करें।

Adv. Vidit Chauhan Collection, Noida

Digitized by Agamnigam Foundation, Chandigarh

: ८२ :

स्वयं तप, दूसरों को मत तपा

शं तप माति तपो अग्ने मा तन्वं तपः ।
वनेषु शुष्मो अस्तु ते पृथिव्यामस्तु यद्धरः ।।
१८ । २ । ३६ ।।

पदार्थः—(अग्ने) हे विद्वन् ! तू (शम्) शान्ति के लिए (तप) तपकर 'किसी को' (अति) अत्याचार से (मा तपः) मत तपा और 'किसी के' (तन्वम्) शरीर को 'अत्याचार से' (मा तपः) मत सता । (वनेषु) सेवनीय व्यवहारों में (ते) तेरा (शुष्मः) बल (अस्तु) होवे और (यत्) जो (हरः) 'तेरा' तेज है, वह (पृथिव्याम्) पृथिवी पर (अस्तु) होवे ।

भावार्थः—विद्वान् पुरुष संसार में शान्ति फैलाने के लिए शम-दम आदि तप करे और किसी को किसी प्रकार न सतावे । इस विधि से बल बढ़ा के उत्तम-उत्तम पदार्थ प्राप्त करके पृथिवी पर प्रतापी होवे ।

Adv. Vidit Chauhan Collection, Noida

Digitized by Agamnigam Foundation, Chandigarh

: ८३ :

दृढ़ संकल्प से कामना-पूर्ति

आकूतिं देवीं सुभगां पुरो दधे
चित्तस्य माता सुहवा नो अस्तु।
यामाशामेमि केवली सा मे अस्तु
विदेयमेनां मनसि प्रविष्टाम् ॥ १९।४।२॥

पदार्थः—(देवीम्) दिव्य गुणवाली, (सुभगाम्) बड़े ऐश्वर्यवाली (आकूतिम्) संकल्प-शक्ति को (पुरः) आगे (दधे) धरता हूँ, (चित्तस्य) चित्त 'ज्ञान' की (माता) माता, 'जननी, उत्पन्न करनेवाली, वह' (नः) हमारे लिए (सुहवा) सहज में बुलाने योग्य (अस्तु) होवे। (याम्) जिस (आशाम्) आशा 'कामना' को (एमि) मैं प्राप्त करूँ (सा) वह 'आशा' (मे) मेरे लिए (केवली) सेवनीय (अस्तु) होवे, (मनसि) मन में (प्रविष्टाम्) प्रवेश की हुई (एनाम्) इस 'आशा' को (विदेयम्) मैं पाऊँ।

भावार्थः—मनुष्य दृढ़संकल्पी होकर ज्ञान को बढ़ावे, जिससे वह जिस शुभ कर्म की आशा मन में करे वह पूरी होवे।

Adv. Vidit Chauhan Collection, Noida

Digitized by Agamnigam Foundation, Chandigarh

: ८४ :

दोष-त्याग

अनुहवं परिहवं परिवादं परिक्षवम् ।
सर्वैर्मे रिक्तकुम्भान् परा तान्त्सवितः सुव ।
१६ । ८ । ४ ॥

पदार्थः—(अनुहवम्) विवाद (परिहवम्) बकवाद (परिवादम्) अपवाद और (परिक्षवम्) नाक की फुरफुराहट, (तान्) इन (रिक्तकुम्भान्) रीते घड़ों 'निकम्मे कामों' को (मे) मेरे (सर्वैः) सब 'दोषों' सहित (सवितः) हे सर्वप्रेरक परमात्मन् ! (परा सुव) दूर कर दे ।

भावार्थः—मनुष्य अपने शारीरिक और आत्मिक दोषों को विचारकर परमेश्वर की उपासना करके दूर करे ।

Adv. Vidit Chauhan Collection, Noida

Digitized by Agamnigam Foundation, Chandigarh

: ८५ :

मर मत

आयुषायुः कृतां जीवायुष्मान् जीव मा मृथाः ।
प्राणेनात्मन्वतां जीव मा मृत्योरुदगा वशम् ॥
१९ । २७ । ८ ॥

पदार्थः—(आयुः कृताम्) जीवन बनानेवाले 'विद्वानों' के (आयुषा) जीवन के साथ (जीव) तू जीवित रह, (आयुष्मान्) उत्तम जीवनवाला होकर (जीव) तू जीवित रह, (मा मृथाः) तू मत मरे। (आत्मन्वताम्) आत्मावालों के (प्राणेन) 'जीवन-सामर्थ्य' से (जीव) तू जीवित रह, (मृत्योः) मृत्यु के (वशम्) वश में (मा उत् अगाः) मत जा।

भावार्थः—मनुष्यों को योग्य है कि बड़े जितेन्द्रिय पुरुषार्थी महात्माओं के समान अपने जीवन को पुरुषार्थी बनाकर यशस्वी होवें।

Adv. Vidit Chauhan Collection, Noida

Digitized by Agamnigam Foundation, Chandigarh

: ८६ :

प्रभो ! तेज, ओज और पराक्रम दे

वर्च आ धेहि मे तन्वां सह ओजो वयो बलम् । इन्द्रियाय त्वा कर्मणे वीर्याय प्रति गृह्णामि शतशारदाय ॥ १९ । ३७ । २ ॥

पदार्थः—[हे परमात्मन् !] (मे) मेरे (तन्वाम्) शरीर में (वर्चः) प्रताप (सहः) उत्साह (ओजः) पराक्रम (वयः) पौरुष और (बलम्) बल (आ धेहि) धारण कर दे । (इन्द्रियाय) इन्द्र 'परमैश्वर्यवान् पुरुष' के योग्य (कर्मणे) कर्म के लिए (वीर्याय) वीरता के लिए और (शतशारदाय) सौ शरद् ऋतुओंवाले 'जीवन' के लिए (त्वा) तुझको (प्रति गृह्णामि) मैं अंगीकार करता हूँ ।

भावार्थः—मनुष्य विद्या की प्राप्ति से परमेश्वरीय नियमों पर चलकर अपना यश बढ़ावें ।

Adv. Vidit Chauhan Collection, Noida

Digitized by Agamnigam Foundation, Chandigarh

: ८७ :

तप और दीक्षा

भद्रमिच्छन्त ऋषयः स्वर्विदस्तपो दीक्षामुपनिषेदुरग्रे ।
ततो राष्ट्रं बलमोजश्च जातं तदस्मै देवा उपसंनमन्तु ।।
१६ । ४१ । १ ।।

पदार्थः—(भद्रम्) कल्याण 'श्रेष्ठ वस्तु' (इच्छन्तः) चाहते हुए (स्वर्विदः) सुख) को प्राप्त होनेवाले (ऋषयः) ऋषियों 'वेदार्थ जाननेवालों' से (तपः) तप 'ब्रह्मचर्य अर्थात् वेदाध्ययन, जितेन्द्रियता आदि' और (दीक्षाम्) दीक्षा 'नियम और व्रत की शिक्षा' का (अग्रे) पहले (उपनिषेदुः) अनुष्ठान किया है। (ततः) उससे (राष्ट्रम्) राज्य (बलम्) बल 'सामर्थ्य' (च) और (ओजः) पराक्रम (जातम्) सिद्ध हुआ है, (तत्) उस 'कल्याण' को (अस्मै) इस पुरुष के लिए (देवाः) विद्वान् लोग (उपसंनमन्तु) झुका देवें।

भावार्थः—विद्वान् लोगों ने पराक्रम से पहले वेदाध्ययन, जितेन्द्रियता आदि तप का अभ्यास करके महासुख पाया है इसलिए ऋषि लोग प्रयत्न करें कि सब मनुष्य विद्वान् होकर महासुख को प्राप्त होवें।

Adv. Vidit Chauhan Collection, Noida

Digitized by Agamnigam Foundation, Chandigarh

: ८८ :

ईश्वर का विराट् रूप

सिन्धोर्गर्भोऽसि विद्युतां पुष्पम् ।
वातः प्राणः सूर्यश्चक्षुर्दिवस्पयः ॥
१९ । ४४ । ५ ॥

पदार्थः—[हे परमात्मन् !] तू (सिन्धोः) समुद्र का (गर्भः) गर्भ 'उदर समान आधार' और (विद्युताम्) प्रकाशवालों का (पुष्पम्) 'विकास, फैलाव-रूप' (असि) है। (वातः) पवन (प्राणः) 'तेरा' प्राण 'श्वास' है, (सूर्यः) सूर्य (चक्षुः) 'तेरा' नेत्र है और (दिवः) आकाश (पयः) 'तेरा' अन्न है।

भावार्थः—मनुष्य विराट् रूप परमात्मा को सर्व-नियन्ता जानकर सदा पुरुषार्थ करें।

Adv. Vidit Chauhan Collection, Noida

Digitized by Agamnigam Foundation, Chandigarh

: ८९ :

मैं सर्वथा निष्पाप बनूँ

अयुतोऽहमयुतो म आत्मायुतं मे चक्षुरयुतं मे श्रोत्रमयुतो मे प्राणोऽयुतो मेऽपानोऽयुतो मे व्यानोऽयुतोऽहं सर्वः ॥ १९ । ५१ । १ ॥

पदार्थः—(अहम्) मैं (अयुतः) अनिन्दित 'प्रशंसा-युक्त होऊँ' (मे) मेरा (आत्मा) आत्मा 'जीवात्मा' (अयुतः) अनिन्दित (मे) मेरी (चक्षुः) आँख (अयुतम्) अनिन्दित (मे) मेरा (श्रोत्रम्) कान (अयुतम्) अनिन्दित (मे) मेरा (प्राणः) प्राण 'भीतर जानेवाला श्वास' (अयुतः) अनिन्दित (मे) मेरा (अपानः) अपान 'बाहिर जानेवाला श्वास' (अयुतः) अनिन्दित (मे) मेरा (व्यानः) व्यान 'सब शरीर में घूमनेवाला वायु' (अयुतः) अनिन्दित 'होवे' (सर्वः) सब-का-सब (अहम्) मैं (अयुतः) अनिन्दित 'होऊँ'।

भावार्थः—जो मनुष्य अपने आपे, अपने आत्मा, अपने इन्द्रियों, अपने अंगों और अपने सर्वस्व से सदा प्रशंसनीय कर्म करते हैं वे ही आत्मोन्नति कर सकते हैं।

Adv. Vidit Chauhan Collection, Noida

Digitized by Agamnigam Foundation, Chandigarh

: ६० :

ज्ञानी समय का सदुपयोग करते हैं

कालो अश्वो वहति सप्तरश्मिः
सहस्राक्षो अजरो भूरिरेताः ।
तमारोहन्ति कवयो विपश्चितस्तस्य
चक्रा भुवनानि विश्वा ।। १९ । ५३ । १ ।।

पदार्थः—(सप्तरश्मिः) सात प्रकार की किरणों-वाले सूर्य 'के समान प्रकाशमान' (सहस्राक्षः) सहस्रों नेत्रवाला (अजरः) बूढ़ा न होनेवाला (भूरिरेताः) बड़े बलवाला (कालः) काल 'समय रूपी' (अश्वः) घोड़ा (वहति) चलता रहता है। (तम्) उसपर (कवयः) ज्ञानवान् (विपश्चितः) बुद्धिमान् लोग (आरोहन्ति) चढ़ते हैं, (तस्य) उस 'काल' के (चक्रा) चक्र अर्थात् घूमने के स्थान (विश्वा) सब (भुवनानि) सत्तावाले हैं।

भावार्थः—महाबलवान् काल सर्वत्र व्यापी और अति शीघ्रगामी, शुक्ल, नील, पीत, रक्त, हरित, कपिश, चित्र वर्ण किरणोंवाले सूर्य के समान प्रकाश-मान है, उस काल को बुद्धिमान् लोग सब अवस्थाओं में घोड़े के समान सहायक जानकर अपना कर्तव्य सिद्ध करते हैं।

Adv. Vidit Chauhan Collection, Noida

Digitized by Agamnigam Foundation, Chandigarh

: ९१ :

सुख-प्राप्ति

तनूस्तन्वा मे सहे दतः सर्वमायुरशीय ।
स्योनं मे सीद पुरुः पृणस्व पवमानः स्वर्गे ॥
१९ । ६१ । १ ॥

पदार्थः—(मे) अपने (तन्वा) शरीर के साथ (तनूः) 'दूसरों के' शरीरों को (सहे) मैं सहारता हूँ; (दतः=दत्तः) रक्षा किया हुआ मैं (सर्वम्) पूर्ण (आयुः) जीवन (अशीय) प्राप्त करूँ; (मे) मेरे लिए (स्योनम्) सुख से (सीद) तू बैठ (पुरुः) पूर्ण होकर (स्वर्गे) स्वर्ग 'सुख पहुँचानेवाले स्थान' में (पवमानः) चलता हुआ तू 'हमें' (पृणस्व) पूर्ण कर ।

भावार्थः—मनुष्यों को योग्य है कि वे सबकी रक्षा करके अपनी रक्षा करें और विद्या और पराक्रम में पूर्ण होकर सबको विद्वान् और पराक्रमी बनाकर आप सुखी होवें और सबको सुखी करें ।

Adv. Vidit Chauhan Collection, Noida

Digitized by Agamnigam Foundation, Chandigarh

: ६२ :

मुझे सबका प्रिय बना

प्रियं मा कृणु देवेषु प्रियं राजसु मा कृणु।
प्रियं सर्वस्य पश्यत उत शूद्र उतार्ये ॥
१९। ६२। १॥

पदार्थः—[हे परमात्मन् !] (मा) मुझे (देवेषु) ब्राह्मणों 'ज्ञानियों' में (प्रियम्) प्रिय (कृणु) कर, (मा) मुझे (राजसु) राजाओं में (प्रियम्) प्रिय (कृणु) कर। (उत) और (अर्ये) वैश्य में (उत) और (शूद्रे) शूद्र में और (सर्वस्य) सब (पश्यतः) देखनेवाले 'जीवों' का (प्रियम्) प्रिय 'कर'।

भावार्थः—जैसे परमेश्वर सब ब्राह्मण आदि से निष्पक्ष होकर प्रीति करता है, वैसे ही विद्वानों को सब संसार से प्रीति करनी चाहिए।

Adv. Vidit Chauhan Collection, Noida

Digitized by Agamnigam Foundation, Chandigarh

: ६३ :

वेदानुसार कर्म

अव्यसश्च व्यचसश्च बिलं विष्यामि मायया ।
ताभ्यामुद्धृत्य वेदमथ कर्माणि कृण्महे ।।
१९ । ६८ । १ ।।

पदार्थः—(अव्यसः) अव्यापक 'जीवात्मा' के (च च) और (व्यचसः) व्यापक 'परमात्मा' के (बिलम्) बिल 'भेद' को (मायया) बुद्धि से (विष्यामि) मैं खोलता हूँ, (अथ) फिर (ताभ्याम्) उन दोनों के जानने के लिए (वेदम्) 'ऋग्वेदादि' ज्ञान को (उत् धृत्य) ऊँचा लाकर (कर्माणि) कर्मों को (कृण्महे) हम करते रहें ।

भावार्थः—मनुष्य जीवात्मा के कर्त्तव्य और परमात्मा का अनुग्रह समझने के लिए वेदों को प्रधान जानकर अपना-अपना कर्त्तव्य करते रहें ।

Adv. Vidit Chauhan Collection, Noida

Digitized by Agamnigam Foundation, Chandigarh

: ६४ :

विघ्नों को हटाता हुआ आगे बढ़

इन्द्र प्रेहि पुरस्त्वं विश्वस्येशान ओजसा ।
वृत्राणि वृत्रहञ्जहि ॥ २० । ५ । ३ ॥

पदार्थः—(इन्द्र) हे इन्द्र ! 'परम ऐश्वर्य वाले राजन् !' (ओजसा) अपने बल से (विश्वस्य) सबका (ईशानः) स्वामी (त्वम्) तू (पुरः) सामने से (प्र इह) आगे बढ़ । (वृत्रहन्) हे वैरियों के नाश करनेवाले ! (वृत्राणि) वैरियों को (जहि) नाश कर ।

भावार्थः—मनुष्य महाबली होकर आगे बढ़ता हुआ विघ्नों को मिटावे ।

Adv. Vidit Chauhan Collection, Noida

Digitized by Agamnigam Foundation, Chandigarh

: ९५ :

धनवान् बनो

गोभिष्टरेमामतिं दुरेवां यवेन क्षुधं पुरुहूत विश्वाम् ।
वयं राजभिः प्रथमा धनान्यस्माकेन वृजनेना जयेम ।।
२० । १७ । १० ।।

पदार्थः—(पुरुहूत) हे बहुतों से बुलाये गये 'राजन् !' (गोभिः) विद्याओं से (दुरेवाम्) दुर्गति-वाली (अमतिम्) कुमति 'वा कंगाली' को और (यवेन) अन्न से (विश्वाम्) सब (क्षुधम्) भूख को (तरेम) हम हटावें । (वयम्) हम (राजभिः) राजाओं के साथ (प्रथमाः) प्रथम श्रेणी वाले होकर (धनानि) अनेक धनों को (अस्माकेन) अपने (वृजनेन) बल से (जयेम) जीतें ।

भावार्थः—मनुष्य प्रयत्न करके विद्याओं द्वारा कुमति और निर्धनता हटाकर भोजन पदार्थ प्राप्त करें और अपने भुजबल से महाधनी होकर राजाओं के साथ प्रथम श्रेणीवाले होवें ।

Adv. Vidit Chauhan Collection, Noida

Digitized by Agamnigam Foundation, Chandigarh

: ९६ :

सर्वोत्पादक प्रभु की उपासना

यस्याश्वासः प्रदिशि यस्य गाव
यस्य ग्रामा यस्य विश्वे रथासः ।
यः सूर्यं य उषसं जजान यो अपां नेता
स जनास इन्द्रः ॥ २० । ३४ । ७ ॥

पदार्थः—(यस्य) जिसकी (प्रदिशि) बड़ी आज्ञा में (अश्वासः) घोड़े (यस्य) जिसकी 'आज्ञा' में (गावः) गाय-बैल आदि पशु (यस्य) जिसकी 'आज्ञा' में (ग्रामाः) गाँव 'मनुष्य-समूह' और (यस्य) जिसकी 'आज्ञा' में (विश्वे) सब (रथासः) विहार करनेवाले पदार्थ हैं, (यः) जिसने (सूर्यम्) (सूर्य) को (यः) जिसने (उषसम्) प्रभात वेला को (जजान) उत्पन्न किया है (यः) जो (अपाम्) जलों का (नेता) पहुँचानेवाला है (जनासः) हे मनुष्यो ! (सः) वह (इन्द्रः) इन्द्र 'बड़े ऐश्वर्यवाला परमेश्वर है ।'

भावार्थः—जिस परमात्मा के अनन्त सामर्थ्य से सब उपकारी जीव और पदार्थ उत्पन्न हुए हैं उस जगदीश्वर की उपासना करके मनुष्य उपकार करें।

Adv. Vidit Chauhan Collection, Noida

Digitized by Agamnigam Foundation, Chandigarh

: ९७ :

परमात्मा की पूजा

अर्चत प्रार्चत प्रियमेधासो अर्चत।
अर्चन्तु पुत्रका उत पुरं न धृष्ण्वर्चत ॥
२०। ९२। ५॥

पदार्थः—(प्रियमेधासः) हे प्यारी 'हितकारिणी' बुद्धिवाले पुरुषो! (धृष्णु) निर्भय (पुरम् न) गढ़ के समान 'उस परमेश्वर' को (अर्चत) पूजो, (प्र) अच्छे प्रकार (अर्चत) पूजो, (अर्चत) पूजो, (उत) और (पुत्रकाः) गुणी सन्तानें 'उसको' (अर्चन्तु) पूजें।

भावार्थः—मनुष्यों को चाहिए कि वे अपने पुत्र-पुत्रियों सहित प्रत्येक क्षण में, प्रत्येक पदार्थ में, प्रत्येक कर्म में परमात्मा की शक्ति को निहारकर आत्मा की उन्नति करें।

Adv. Vidit Chauhan Collection, Noida

Digitized by Agamnigam Foundation, Chandigarh

: ६८ :

तू ही माँ, तू ही पिता

त्वं हि नः पिता वसो त्वं माता शतक्रतो बभूविथ ।
अधा ते सुम्नमीमहे ॥ २० । १०८ । २ ॥

पदार्थः—(वसो) हे बसानेवाले ! (शतक्रतो) हे सैकड़ों कर्मोंवाले 'परमेश्वर' (त्वम्) तू ही (नः) हमारा (पिता) पिता और (त्वम्) तू ही (माता) माता (बभूविथ) हुआ है, (अध) इसलिए (ते) तेरे (सुम्नम्) सुख को (ईमहे) हम माँगते हैं ।

भावार्थः—परमेश्वर सदा से सब सृष्टि का पालन-पोषण करता है । हम उसी से प्रार्थना करके पुरुषार्थ के साथ सुखी होवें ।

Adv. Vidit Chauhan Collection, Noida

Digitized by Agamnigam Foundation, Chandigarh

: ९९ :

जो माँगूँ वही दे

पौरो अश्वस्य पुरुकृद् गवामस्युत्सो देव हिरण्ययः ।
नकिर्हि दानं परिमर्धिषत् त्वे यद्यद्यामि तदा भर ॥
२० । ११८ । २ ॥

पदार्थः—(देव) हे देव ! 'कामना योग्य परमेश्वर !' तू (अश्वस्य) घोड़ों को (पौरः) भरपूर करनेवाला, (गवाम्) गायों का (पुरुकृतः) बहुत करनेवाला (हिरण्ययः) तेजोमय और (उत्सः) जल के स्रोत कुएँ के समान 'उपकारी' (असि) है, (हि) क्योंकि (त्वे) तेरे (दानम्) दान को (नकिः) कोई भी नहीं (परिमर्धिषत्) नाश कर सकता (यद्यत्) जो-जो (यामि) माँगता हूँ (तत्) वह-वह (आ भर) भरपूर कर ।

भावार्थः—मनुष्य परमेश्वर की सृष्टि में सब पदार्थों से उपकार लेकर सदा आनन्द पावें ।

Adv. Vidit Chauhan Collection, Noida

Digitized by Agamnigam Foundation, Chandigarh

: १०० :

वह अधोगति को प्राप्त होता है

यो जाम्या अप्रथयस्तद् यत् सखायं दुधूर्षति।
ज्येष्ठो यदप्रचेतास्तदाहुरधरागिति ॥
२० । १२८ । २ ॥

पदार्थः—(यः) जो मनुष्य (जाम्याः) कुल-स्त्री को (अप्रथयः) गिराता है (तत्) वह पुरुष और (यत्) जो (सखायम्) मित्र को (दुधूर्षति) मारना चाहता है और (यत्) जो (ज्येष्ठः) अति वृद्ध होकर (अप्रचेताः) अज्ञानी है (तत्) वह (अधराक्) अधोगामी होता है (इति) ऐसा (आहुः) वे विद्वान् लोग कहते हैं।

भावार्थः—जो मनुष्य सती स्त्री को पाप में लगावे, मित्रघाती हो और वयोवृद्ध होकर भी अज्ञानी हो, वह विद्वानों में नीच गति पाता है।

Adv. Vidit Chauhan Collection, Noida

Digitized by Agamnigam Foundation, Chandigarh

चारों वेद-शतकों पर पत्रों, विद्वानों और नेताओं की सम्मतियाँ

दैनिक 'हिन्दुस्तान' लिखता है—प्रत्येक वेद से अलग-अलग चुने हुए सौ-सौ मन्त्रों का संकलन किया गया है और साथ ही उनका सरल हिन्दी में पदार्थ तथा भावार्थ दिया गया है। वेद का परिचय प्राप्त करनेवालों के लिए शतक उपादेय हैं।

श्री प्रकाशवीर शास्त्री—वेदों के १००-१०० मन्त्रों का उत्तम संग्रह करके आपने प्रकाशित की हैं, मिलीं। आपका यह प्रयास सचमुच ही स्तुत्य है।

पं० नरदेव शास्त्री वेदतीर्थ—अत्यन्त सुन्दर, सुमनोहर, आकर्षक रूप से मुद्रित हुए हैं। वस्तुतः ऐसे सस्ते साहित्य से ही वेदों का प्रचार होगा।

श्री अनन्तशयनम् आयंगर—The extracts from the four Vedas are select ones appropriate and useful to the present generation, to give them an insight into our ancient lore. I hope that the book will become popular and useful.

Adv. Vidit Chauhan Collection, Noida

Digitized by Agamnigam Foundation, Chandigarh
पण्डित श्री श्रीपाद दामोदर सातवलेकर पारडी "वैदिक धर्म" में लिखते हैं—'वेद का पढ़ना-पढ़ाना, सुनना-सुनाना सब आर्यों का परम धर्म है'—महर्षि दयानन्द का यह कथन स्फूर्तिदायक कथन है। और यह तभी हो सकता है जब कि वेद का पुस्तक प्रकाशित करके सस्ते-से-सस्ते मूल्य में दी जा सकें। इस दिशा में एक नया कदम श्री गोविन्दराम हासानन्द जी की प्रकाशन-संस्था ने उठाया है। चारों वेदों के सौ-सौ मन्त्रों के भाष्य-सहित संकलन को पॉकेट साइज में प्रकाशित किया है। इस पुस्तक का प्रिण्ट, कागज और सभी सामग्री अच्छी है।

श्री के० एम० मुन्शी—यह जानकर प्रसन्नता हुई कि आपने जन-साधारण में वेदों के प्रचार के लिए हिन्दी शतक प्रकाशित किये हैं। इससे वैदिक प्रचार-शृंखला में नवीन साहित्य की अभिवृद्धि हुई है। मैं आपके प्रयास के लिए शुभ कामना चाहता हूँ।

डॉ० सर राधाकृष्णन्—They are valuable and I hope they will be read widely.

श्री लालबहादुर शास्त्री—मैं समय पाकर उन्हें अवश्य देखने का प्रयास करूँगा।

Adv. Vidit Chauhan Collection, Noida
गोविन्दराम हासानन्द, नई सड़क, दिल्ली-६

Digitized by Agamnigam Foundation, Chandigarh

Adv. Vidit Chauhan Collection, Noida

Digitized by Agamnigam Foundation, Chandigarh

चारों वेदों के शतक

आर्य विद्वानों व नेताओं की सम्मतियाँ

पं० वासुदेव शरण अग्रवाल—सौ-सौ मन्त्रों का चुनाव बहुत योग्यता से किया है।

पं० गंगाप्रसाद उपाध्याय—मन्त्र बहुत अच्छे हैं, इससे वेद-प्रचार में विशेष सहायता मिलेगी। मेरा आशीर्वाद है।

श्री पं० अमरसिंह जी आर्य पथिक—आपने इन शतकों को इतना सुन्दर छपवाया है कि उनकी प्रशंसा न करना पाप प्रतीत होता है। यदि ये सुन्दर शतक हाथों-हाथ न निकल जायें तो समझना चाहिए कि लोग अन्धे हो गये हैं।

प्रि० नित्यानन्द वेदालंकार, एम० ए०—संकलन बुद्धिपूर्वक हुआ है। शतक सम्पूर्ण वेद-प्रेमियों के लिए निश्चित रूप से संग्रह योग्य है।

श्री पं० श्रीपाद दामोदर सातवलेकर, पारडी

वैदिक धर्म में लिखते हैं :—"वेद का पढ़ना-पढ़ाना, सुनना-सुनाना सब आर्यों का परम धर्म है" महर्षि दयानन्द का यह कथन स्फूर्तिदायक कथन है। और यह तभी हो सकता है जब कि वेद की पुस्तक प्रकाशित करके सस्ते से सस्ते मूल्य में दी जा सकें। इस दिशा में एक नया कदम श्री गोविन्दराम हासानन्द जी की प्रकाशन संस्था ने उठाया है। चारों वेदों के सौ-सौ मन्त्रों का भाष्य सहित संकलन को पॉकेट साइज में प्रकाशित किया है। इस पुस्तक का प्रिण्ट, कागज और सभी सामग्री अच्छी है।

Adv. Vidit Chauhan Collection, Noida

गोविन्दराम हासानन्द, ४४०८ नयी सड़क, दिल्ली-६